एक संस्मरणात्मक विवेचन

संस्मरणों के बीच निराला

महाकवि निराला के जीवन-परिचय कृतित्व व्यक्तित्व एवं
संस्मरणों का संक्षिप्त तथा प्रामाणिक संकलन।

शंकर सुल्तानपुरी

भारतीय ग्रन्थमाला
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
गूंगे नवाब का पार्क, अमीनाबाद
लखनऊ

● प्रकाशक
विनोद शर्मा
सचालक, भारतीय ग्रथमाला
गूगे नवाब का पाक, अमीनाबाद
लखनऊ—१

● मूल्य —
चार रुपये

● द्वितीय सस्करण
मई १९६८

● मुद्रक
साथी प्रस
लखनऊ

लेखकीय वक्तव्य

संस्मरणों के बीच निराला : महाकवि पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी की गौरवपूर्ण जीवन यात्रा का संस्मरणात्मक चित्रण है, उनके व्यक्तित्व, साहित्यिक मान्यताओं एवं कृतित्व का विवेचनात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन नहीं।

महाकवि का व्यक्तिगत, सामाजिक और दलित जीवन असंख्य लोगों की प्रेरणा, आश्चर्य, श्रद्धा एवं आस्था का स्थान रहा है और यही कारण है कि उनके जीवित कृतित्व से अनभिज्ञ रहते हुए भी जनता उनकी महानता और देवत्व के समक्ष नत-मस्तक और श्रद्धालु रही है। कोई भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा।

उनकी दानप्रियता, उदारता और स्वाभिमान की अनेक ज्वलन्त घटनाओं से हिन्दी साहित्य भरा पड़ा है। वे घटनायें कहानियों का रूप लेकर जन-साधारण में कहा-सुना जाता हैं।

उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में अनेक कवितायें, संस्मरण, लेख और कई ग्रन्थ लिखे गये हैं और प्रस्तुत पुस्तक भी उसी शृंखला की एक कड़ी है परन्तु इसमें निराला को एक अलग ढंग से प्रस्तुत करने की भावना प्रधान रही है।

महाप्राण निराला के आन्तरिक और दलित जीवन तथा उनके आस-पास की समस्याओं एवं परिस्थितियों को मैंने विशेष रूप से चित्रित और प्रस्तुत किया है ताकि पाठक और हिन्दी प्रेमी निराला को अधिक निकट से देख और समझ सकें।

मेरा विश्वास है कि निराला के पढ़ने और समझने में रुचि रखने वाले मेरे इस प्रयास से अवश्य लाभान्वित होंगे। मैं श्री विनोद शर्मा, अध्यक्ष भारतीय ग्रन्थ माला, लखनऊ का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे इस प्रयास को पुस्तक का रूप दिया। उन पत्र पत्रिकाओं और पुस्तकों का भी आभारी हूँ जिनसे मुझे पर्याप्त सहायता मिली है।

शंकर सुल्तानपुरी

● प्रकाशक
विनोद शर्मा
संचालक भारतीय ग्रन्थमाला
गूंग नवाब का पार्क अमीनाबाद
लखनऊ—१

● मूल्य —
चार रुपये

● द्वितीय संस्करण
मई १९६८

● मुद्रक
साथी प्रेस
लखनऊ

लेखकीय वक्तव्य

संस्मरणों के बीच निराला महाकवि पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी की गौरवपूर्ण जीवन यात्रा का संस्मरणात्मक चित्रण है, उनके व्यक्तित्व, साहित्यिक मानदण्ड एवं कृतित्व का विवेचनात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन नहीं।

महाकवि का व्यक्तिगत, सामाजिक और दैनिक जीवन असंख्य लोगों की प्रेरणा, आश्चर्य, श्रद्धा एवं आदर का स्थान रहा है और यही कारण है कि उनके जटिल कृतित्व से अनभिज्ञ रहते हुए भी जनता उनकी महानता और देवत्व के समक्ष नत मस्तक और श्रद्धानत रही है। कोई भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा।

उनकी दानप्रियता, उदारता और स्वाभिमान की अनेक ज्वलन्त घटनाओं से हिन्दी साहित्य भरा पड़ा है। वे घटनायें कहानियों का रूप लेकर जन-साधारण में पढ़ा-सुना जाता है।

उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में अनेक कवितायें, संस्मरण, लेख और दर्जनों ग्रन्थ लिखे गये हैं और प्रस्तुत पुस्तक भी उसी शृंखला की एक कड़ी है, परन्तु इसमें निराला को एक अलग ढंग से प्रस्तुत करने की भावना प्रधान रही है।

महाप्राण निराला की आन्तरिक और दैनिक जीवन तथा उनके आत्मीय जनों की समस्याओं एवं परिस्थितियों को मैंने विशेष रूप से उचित और प्रस्तुत किया है ताकि पाठक और हिन्दी प्रेमी निराला को अधिक निकट से देख और समझ सकें।

क्रम सूची

संस्मरण

संस्मरणों के बीच निराला

महाकवि की पाँच सुन्दर रचनायें

वर दे !

वर दे वीणावादिनि वर दे !
प्रिय स्वतन्त्र-रव अमिय मन्त्र नव
भारत में भर दे !

काट अंध उर के बन्धन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !

नव गति नव लय ताल छन्द नव
नवल कंठ नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे !

वर दे वीणावादिनि वर दे !



अभी न होगा मेरा अंत !
अभी अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसन्त ।
अभी न होगा मेरा अन्त ।

हरे हरे ये पात
डालियाँ कलियाँ कोमल गात ।
मैं ही अपना स्वप्न मृदुल कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर

पुष्प पुष्प से तन्द्रालस लालसा खींच लूँगा मैं
अपने नवजीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं
द्वार दिखा दूँगा फिर उनको
है मेरे वे जहाँ अनन्त—
अभी न होगा मेरा अन्त ।

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण
इसमें कहाँ मृत्यु
है जीवन ही जीवन ।
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण किरण कल्लोलों पर बहता रे यह बालक मन
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बन्धु वसन्त
अभी न होगा मेरा अन्त । [१९०]

[मन १९४० म निराला जा ने गाधी जा पर एक व्यगमयी कविता लिखा था जिमक कुछ अश यहाँ प्रस्तुत हैं]

बापू तुम मुर्गी खात यदि ?
तो क्या भजत रहत तुमको
ऐर गरे नत्थू खरे ?
सिर क बल खड़ हुय होत
हिन्दी क न्नन नवन कवि
    बापू तुम मुर्गी खात यदि

तो क्या अजनार हुय होत
कुन क कुन कायथ बनिया क ?
दुनिया के मवम बड पुरुष
आदम भेडों क होत भो
    बापू तुम मुर्गी खात यदि ?

तो क्या पुरुष राजन टडन
गोराचारी भी भजत ?
भजता होता तुमको मैं औ
मरी प्यारी अल्ला रक्खी ।
    बापू तुम मुर्गी खात यदि ?



[नये पत्ते १९४६ में प्रकाशित गरम पकौड़ी]

गरम पकौड़ी—
ऐ गरम पकौड़ी।
तेल की भुनी
नमक मिर्च की मिली
ऐ गरम पकौड़ी।

मेरी जीभ जल गई
सिसकियाँ निकल रहीं
लार की बूँदें कितनी टपकीं
पर दाढ़ तले दबा ही रक्खा मैंने

कंजूस ने ज्यों कौड़ी।
पहले तूने मुझको खींचा
दिल लेकर फिर कपड़े सा फींचा

अरी तेरे लिए छोड़ी
बम्हन की पकाई
मैंने घी की कचौड़ी।
ऐ गरम पकौड़ी।



सुख का दिन डूबे डूब जाय
तुमसे न सहज मन ऊब जाय
खुल न जाय मिली गाँठ मन की
लुट जाय न उठी राशि धन की
धुल न जाय आन शुभानन की
सारा जग रूठे रूठ जाय
उलटी गति सीधी हो न भले
प्रति जन की दाल गले न गले

[१९५२]

निराला

पारिवारिक परिचय और प्रारम्भिक जीवन

निराला जी के पिता पण्डित रामसहाय त्रिपाठी उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी थे किन्तु निर्धनता और परिवार के भरण-पोषण की समस्या ने उन्हें बंगाल में ला पटका था। वे बंगाल की महिषादल नामक रियासत में राज्य कोषागार के संरक्षक पद पर थे। महिषादल के राजा साहब की इन पर विशेष कृपा थी। पण्डित रामसहाय जी को राजा साहब अत्यधिक मानते थे। जिसके फलस्वरूप इनकी पत्नी के स्वर्गवास के बाद इनके पुत्र सूर्यकुमार का पालन-पोषण राजा साहब के बच्चों के साथ [illegible] द्वारा समान रूप से हुआ। इसका सारा भार स्वयं राजा साहब ने उठाया।

निराला का जन्म

बसन्तपंचमी के दिन बंगाल के घर-घर में माँ सरस्वती का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सम्वत् [illegible] की इसी शुभ पावन बसन्तपंचमी को पण्डित रामसहाय त्रिपाठी के घर में बालक सूर्यकुमार ने जन्म लिया।

पण्डित रामसहाय जी का घर आनन्द और उमंग से भर उठा। उधर अवस्था में बड़ा होने के बाद परमात्मा ने इन्हें पुत्रधन भेंट किया था।

बसन्तपंचमी की तिथि विद्या एवं कला की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का जन्म

ये संगीत प्रेमी भी थे। बड़े-बड़े संगीतज्ञों और गवय्यों के साथ बैठकर इन्होंने संगीत विद्या का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त किया। उन दिनों हारमोनियम पर इन्होंने गानों का अभ्यास किया। धीरे धीरे इन्हें ठुमरी, ध्रुपद, भजन तथा बंगला के भाव गानों का अच्छा अभ्यास हो गया। गीत गोविन्द के संस्कृत गायन से लेकर—सूर तुलसी मीरा आदि के अनेक गान बड़ी कुशलता पूर्वक गा लेते। यही कारण था कि ये सर्वप्रिय हो गये।

निराला की कुछ रोचक प्रवृत्तिया

निराला जी कुशल तैराक भी थे। ये बड़ी कुशलता पूर्वक तैराकी की अनेक कलाओं का प्रदर्शन करते थे। यह कला इन्होंने राज्य में ही सीखी थी।

ये गोलों के खेल में भी बड़े पारंगत थे। गोला कितना ही दूर क्यों न हो इनका निशाना अचूक बैठता था। ये नाव के तरह तरह के खेलों में भी कुशल थे।

इनके पुत्र श्री रामकृष्ण त्रिपाठी ने स्वयं अपने लेख में लिखा है—निश्चय ही निराला जी का जीवन अनेक गुणों का समन्वय था। बचपन में ढेला या पत्थर के टुकड़ों को लेकर जब मालाकार रूप में घुमाते तो बड़ा सुन्दर लगता। क्या मजाल कि कोई टुकड़ा जमीन पर गिर जाय। वे सभी टुकड़े क्रम से उनके हाथ को छूकर आसमान की ओर भागते दिखाई देते थे।

अपने ऊपर फेंके गये या प्रहार किये गये ईंट के टुकड़े या पत्थर को बड़ी कुशलता से पकड़ लेते थे। प्रहारक का पत्थर निराला को छू भी न पाता बल्कि उसमें बड़ा आनन्द होता था।

निराला जी का विवाह

निराला जी का विवाह सन् १९११ के लगभग सम्पन्न हुआ। इस समय उनकी अवस्था १५ वर्ष की रही होगी और उनकी धर्मपत्नी की ग्यारह-बारह वर्ष की।

निराला जी के श्वसुर पं० रामदयाल त्रिवेदी (चांदपुर) फतेहपुर के निवासी थे। वे सुखी सम्पन्न और रईस आत्मा थे। भारी दान दहेज देकर इन्होंने बड़े धूम धाम के साथ बेटी का ब्याह किया था और एक वर्ष बाद उसका गौना भी कर दिया था। कुछ दिनों बाद रामसहाय जी अपनी बहू और निराला को साथ लेकर बंगाल आये लेकिन अब निराला का मन पढ़ाई की ओर से उचटने लगा था। नवीं कक्षा तो उन्होंने किसी तरह पास कर ली मगर दसवीं कक्षा न पास कर सके। परीक्षा पत्र और कापी यूं ही छोड़कर उन्होंने विद्यार्थी जीवन से संन्यास ले लिया परन्तु घर में यह बात प्रकट नहीं की। परीक्षाफल निकलने पर सच्चाई पिता के सामने आई। वे निराला पर बहुत बिगड़े और उनके ठाट-बाट के सारे खर्च छीन लिये। उनकी धर्मपत्नी के गहने भी उतरवा लिये और उन्हें पत्नी सहित घर से निकल जाने का आदेश दिया।

उन्होंने निराला जी से कहा अब तुम बड़े हुए जो कुछ पढ़ना था पढ़ चुके। तुम्हारा विवाह हो गया। तुम्हारे प्रति मेरे सभी कर्तव्य पूर्ण हो गये। अब तुम उपार्जन करके अपना तथा अपनी पत्नी का खर्च चलाओ।

पिता द्वारा निष्कासित होने पर वे पत्नी सहित अपनी ससुराल डलमऊ चले गये। वहां पर उनका खूब स्वागत हुआ। ससुराल वालों ने दामाद की खातिर में कोई कसर बाकी नहीं रक्खी। निराला जी को वहाँ किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी पड़ी।

इसी सन्दर्भ में एक रोचक और महत्वपूर्ण घटना का वर्णन कर देना आवश्यक होगा जिसने हमें क्या समूचे भारत को हिन्दी का इतना महान कवि दिया। निराला का हिन्दी में आना भी एक रोचक घटना है।

एक दिन निराला जी ने हिन्दी भाषा सम्बन्धी किसी प्रसंग पर अपनी धर्मपत्नी से कहा—तुम हिन्दी हिन्दी करती हो हिन्दी में क्या है?

जब तुम्हें आती ही नहीं तब कुछ नहीं है। पत्नी ने उत्तर दिया।

धर्मपत्नी के तर्कसंगत उत्तर से निराला को अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी किन्तु वे पुनः बोले—हिन्दी हमें नहीं आती?

यह तो तुम्हारा जबान चलाना है। पत्नी पुनः बोली। बैसवाड़ी बोलते हो। तुलसीकृत रामायण पढ़ी है बस। तुम खड़ी बोली को क्या जानते हो?

वास्तव में उस समय तक निराला जी को हिन्दी की खड़ी बोली के साहित्य की जानकारी अधिक नहीं थी। धर्मपत्नी ने ही इन्हें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त आदि की रचनायें बताईं और उनके पठन के लिये प्रेरित किया।

उन्हीं की प्रेरणा से वे बंगला की गम्भ्यासमना परिधि से निकल कर हिन्दी साहित्य की ओर झुके।

आज दिन निराला को हिन्दी का युग प्रवर्तक महाकवि कहे जाने का श्रेय उनकी धर्मपत्नी को भी प्राप्त है अतएव हिन्दी जगत उनका सदैव आभारी रहेगा।

निराला जी अपनी धर्मपत्नी सहित लगभग छः माह ससुराल में रहे। बाद को जब पण्डित रामसहाय जी स्वस्थ हो लौटे तो स्वयं आकर अपने पुत्र और पुत्रवधू को घर वापस ले गये।

धर्मपत्नी की मृत्यु

देश भर में इन्फ्लुएंजा फैला हुआ था। ऐसी भयंकर बीमारी ने महाकवि की प्रेरणादायिनी धर्मपत्नी को भी मौत की गोद में सुला दिया। उस दैत्य से ही संतोष न हुआ उसने इनके अन्य कुटुम्बीजनों को भी एक एक करके ग्रसित कर लिया।

महाकवि पर भीषण आघात हुआ। इस समय निराला जी की दो संतान थीं पुत्र रामकृष्ण जिसकी आयु चार वर्ष की थी और पुत्री सरोज जिसकी उम्र एक वर्ष की थी। इन दोनों बच्चों को तो पालन-पोषण के लिए ननिहाल वालों ने ले लिया किन्तु निराला जी के सामने अभी अपने भाई के चार बच्चों के पालन-पोषण की समस्या थी। वे [illegible] महिषादल रियासत में चले गये और राज्याश्रय प्राप्त कर बच्चों का पालन-पोषण करने लगे। निराला जी ने राज्य कार्य करना भी आरम्भ कर दिया किन्तु जिस रियासत की सेवा जीवन भर उनके पिता ने पूर्ण तल्लीनता के साथ की थी निराला उसमें दो ही तीन वर्ष में ऊब गये क्योंकि वे स्वतन्त्र विचारों वाले स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उन्हें राजनीति [illegible] में दिलचस्पी न थी। उनका कवि हृदय बन्धन में [illegible] [illegible]।

अन्त में एक दिन उन्होंने नौकरी पर त्याग पत्र दे दिया। अपनी आन्तरिक भावना और हृदय को वे अधिक दबाव न दे सके।

स्वच्छन्द विचारों और भावनाओं में विचरण करने वाला कवि हृदय बन्धन कहाँ स्वीकार करता है ?

पत्नी की आकस्मिक वाग्णिक मृत्यु ने निराला के कवि हृदय को गहरा आघात पहुँचाया उनकी सुकोमल भावनायें वेदना के गहन सागर में डूब गईं और फिर विशेष रूप में उनका झुकाव साहित्य सृजन की ओर हुआ जो अन्तिम काल तक उनके साथ रहा।

केवल बाईस वर्ष की अवस्था में पत्नी को खोकर निराला जैसे प्रतिभावान और सुन्दर नवयुवक के लिए दूसरा विवाह कर लेने के लिए बहुत लोगों का दबाव पड़ा किन्तु उन्होंने पुनः विवाह सूत्र में बंधना स्वीकार नहीं किया। जिस पावन प्रेरणा को उन्होंने अन्तस्थान में दिया था उसी के वियोग में अनवरत तक डूबे रहे।

निराला—साहित्य सेवा की ओर

सन् १९२० में नौकरी त्यागने के बाद उन्होंने साहित्य-सेवा का दृढ़ व्रत लिया और अनेक संघर्षों का सामना करते हुए भी अपने पथ पर दृढ़ रहे।

प्रारम्भिक काल में इस क्षेत्र में उन्हें नाना प्रकार के संकट सहने पड़े किन्तु निराला कभी विचलित होते नहीं देखे गये।

उनकी मुक्त छन्द का साहित्य में घोर विरोध किया गया। आलोचकों ने उनकी मुक्त छन्द रचनाओं को केंचुआ और रबड़ छन्द का उपहास किया था।

इतना ही नहीं साहित्यिक विरोध का प्रभाव उनकी आर्थिक स्थिति पर भी पड़ा। निर्धनता का अभिशाप इतना बढ़ा कि न अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई का भी उचित प्रबन्ध न कर सके परन्तु अपने बच्चों के प्रति उनके हृदय में प्यार भरा था और बच्चे सदा से उन्हें प्रणाम तथा पुत्री स्नेह के अभिलाषी रहते थे। आलोचकों की परवाह न करके वे निरन्तर अपने सृजन के प्रति गतिशील रहे।

एक समय ऐसा भी आया कि विरोधियों को उनके समक्ष नत मस्तक होना पड़ा। निराला के कृतित्व की मान्यता देने के लिए वे विवश हो गये।

निराला जी हिन्दी के युगान्तरकारी कवि रहे हैं। जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर हिन्दी-साहित्य में नया मोड़ पैदा किया है। आदि कवि बाल्मीकि से लेकर अब तक हमारे देश में छन्दों के जटिल नियमों में विबद्ध कविता को मुक्ति दिलाने वाले निराला के अनुगामियों की संख्या आज हिन्दी संसार में थोड़ी नहीं है।

उन्होंने अपनी दिव्य प्रतिभा और अदम्य साहस के बल पर हमें दिखा दिया कि काव्य की इस नूतन दिशा में कितनी सम्भावनायें विद्यमान हैं।

उनकी काव्य शैली उनके विद्रोही स्वभाव की परिचायिका है। वे सामाजिक जीवन में सामाजिक रूढ़ियों के कट्टर विरोधी थे और छन्दों की गति एवं मात्राओं की स्वच्छंदता एवं स्वतन्त्रता के प्रेमी थे।

निराला का हिन्दी में साहित्य सृजन

पत्नी की मार्मिक प्रेरणा ने निराला को बंगला की श्यामला धरती से खींच कर हिन्दी साहित्य उपवन को पल्लवित पुष्पित करने को विवश कर दिया।

उसी समय उन्होंने हिन्दी की खड़ी बोली का अभ्यास करना आरंभ किया। आरंभ में उन्हें हिन्दी विभक्तियों और लिंगों में उलझन हुई परन्तु कुछ ही समय के अभ्यास और परिश्रम ने उनकी समस्या हल कर दी और वे परिपक्व होकर हिन्दी में अनवरत लिखने लगे।

इस उनकी अथक साधना का ही फल था कि अपनी अनेक काव्यगत विशेषताओं के कारण वे अपने सम-कालीन साहित्यिकों को पछाड़ कर बहुत आगे निकल गये। उस समय की उनकी रचनाओं में 'जुही की कली' का आदरणीय स्थान है। १९१६ में उनकी अधिवास प्रकाशित हुई थी। उन दिनों उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द की कविताओं का छन्दोबद्ध अनुवाद भी किया था। सन १९३० में उन्होंने हिन्दी-बंगला का तुलनात्मक व्याकरण लिखा था।

मतवाला निराला मिलन

जिन दिनों निराला जी 'समन्वय' का सम्पादन कार्य कर रहे थे, उसी मध्य एक दिन उनका सम्पर्क 'मतवाला' के सम्पादक श्री महादेव प्रसाद सेठ से हुआ।

सेठ जी अपनी सहृदयता और गुणग्राहकता के लिए प्रसिद्ध थे अतएव शीघ्र ही वे निराला के प्रशंसकों की प्रथम श्रेणी में आ गये।

निराला की तत्कालीन रचनाओं को सर्व साधारण में प्रकाशित करने में स्व० सेठ जी का बहुत बड़ा सहयोग और हाथ रहा है।

सेठ जी ने निराला के कृतित्व को पहचाना। उनकी कृतियों की सराहना की और निराला विरोधी साहित्यिक ठेकेदारों की आलोचना की परवाह न करके उनकी छन्दोबद्ध रचनाओं को प्रकाश में आने का अवसर दिया। बाद को इन्हीं विरोधियों को नत मस्तक होना पड़ा।

उन्हीं के प्रोत्साहन स्वरूप निराला की ओजमयी प्रतिभा दिन रश्मि के साथ प्रस्फुटित होती चली गई।

'मतवाला न होता, 'निराला' न होता

सन् १९२३–२४ में 'मतवाला' के सम्पादक स्व० महादेव सेठ ने निराला को 'मतवाला' में बुला लिया। बाद को पत्र 'मतवाला' निराला की प्रतिभा के विकास एवं प्रसार का विस्तृत मार्ग सिद्ध हुआ।

इनका नामकरण—'निराला' उन दिनों 'मतवाला' के अनुप्रास पर किया गया। इनकी 'परिमल' में संकलित रचनायें अधिकांशतः सर्व प्रथम 'मतवाला' में ही प्रकाशित हुई थीं। इनकी उन मुक्त छन्द की रचनाओं का फिर विरोधियों ने भी सत्कार किया और उन्हें उच्च स्थान प्राप्त हुआ। बाद को निराला जी जिस दिशा का इशारा किये, आज विशिष्ट मार्ग पर अविरत चलते रहे हैं। उनका विरोध करने वाले उनके मार्ग का अनुसरण करने लगे। उनके पथगामियों की संख्या सहस्रों में पहुँच गई। साहित्य के संकुचित बंधन मुक्त हो गये और महाकवि ने युग को परिवर्तित कर दिया।

निराला किन किन विद्वानों से प्रभावित हुये ?

महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर से वे अत्यधिक प्रभावित हुये और टैगोर के साहित्य ने उन पर सृजन का गहरा प्रभाव डाला। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा और उनके उत्कृष्ट जीवन दर्शन ने निराला को विशेष रूप से आकृष्ट किया। वे केवल साहित्यिक ही नहीं बने रहे वरन् दार्शनिक और विचारक भी बन गये।

पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क स्वरूप उन्हें साहित्य जगत में निरन्तर बढ़ने की प्रेरणा मिली। उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने समन्वय पत्रिका का सम्पादन भार भी उठाया और सफल सम्पादक के रूप में १२ वर्षों तक कार्य किया।

स्वर्गीय महादेव प्रसाद सेठ को निराला को निराला बनाने का सबसे बड़ा श्रेय है। निराला की काव्य प्रतिभा से परिचित होकर उन्होंने उन्हें स्नेह से अपनाया और मतवाला में उनकी रचनायें निरन्तर प्रकाशित होती रहीं। जिसके फलस्वरूप उनकी कीर्ति समस्त देश में फैलती गई।

निराला का अधिकांश जीवन कलकत्ता के बाद प्रयाग जैसी पावन नगरी में ही व्यतीत हुआ। जो हिन्दी के अनेक महारथियों का गढ़ कहा जाता है और साथ ही तीर्थराज भी। उन्होंने इसके निवास के लिए स्थान भी अत्यधिक निमित्त और प्रेरणादायक चुना—गंगा का तट।

तीर्थराज प्रयागवासी महाप्राण निराला को पावन सुरसरि ने सर्वाधिक प्रभावित किया यह कहना अतिशयोक्ति न होगा।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से निराला की भेंट

सम्मरणा के बाद निराला]

अचानक एक दिन निराला से जान न किया उन बात स्वामी से कुछ विवाद गा
गया और फिर स्वाभिमानी निराला ने नौकरी छोड़ दी।

वे नियामत का नारंग लाकर उपन नौत्र घर गए।

परन्तु यह आयाम निराला का मार्ग — सता म विमुख नहीं कर सका। कितना
ना आर्थिक समस्या उनका समस्त वया न रह व परान्त उन नहीं रह गए।

उन दिनों निराला जी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से मिलने के लिए
कभी-कभी कानपुर जाया करते थे। द्विवेदी जी उन दिनों सरस्वती के सम्पादन प्राप्त
कर वहीं निवास करते थे।

निराला की आर्थिक स्थिति पर द्विवेदी जी ने बड़ी चिन्ता प्रकट की
उनकी नौकरी के लिए चिन्ता की परन्तु निराला को आश्चर्य हुआ निराला थे।
व कभी जाने वाले न थे और अन्त में पुनः महादेव जी के अनुरोध पर वहाँ
नौकरी स्वीकार कर ली।

द्विवेदी जी के अनुरोध पर ही उन्होंने कलकत्ता में जाना स्वीकार
किया था।

यहाँ पर निराला जी ने रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द साहित्य का
गम्भीर अध्ययन किया।

इस बीच में निराला की रचनाएँ प्रकाशित होती रहीं।

उन्होंने वर्षों तक समन्वय का सम्पादन कार्य भी किया।

निराला साहित्य के विभिन्न स्वरूप

कवि निराला

निराला के साहित्य में विद्रोह का उन्मुक्त प्रतिक्रियाएँ निराला के प्रारम्भ से ही
परिस्थितियों और आकांक्षाओं के परिणाम थे। उनके जीवन की घटनाओं का उनके साहित्य
पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा। उनके काव्य में शान्ति एवं सौन्दर्य-

निराला किन किन विद्वानो से प्रभावित हुये ?

महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर से वे अत्यधिक प्रभावित हुए और टैगोर के साहित्य ने उन पर सृजन का गहरा प्रभाव डाला। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा और उनके उत्कृष्ट जीवन दर्शन ने निराला को विशेष रूप से आकृष्ट किया। वे केवल साहित्यिक ही नहीं बने रहे वरन दार्शनिक और विचारक भी बन गये।

पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी के ज्ञानमय स्वरूप से उन्हें साहित्य जगत में निरन्तर बढ़ने की प्रेरणायें मिलीं। उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने समन्वय पत्रिका का सम्पादन भार भी उठाया और सफल सम्पादक के रूप में कई वर्षों तक कार्य किया।

स्वर्गीय महादेव प्रसाद सेठ को निराला को निराला बनाने का सबसे बड़ा श्रेय है। निराला की काव्य प्रतिभा से परिचित होकर उन्होंने उन्हें स्नेह से अपनाया और मतवाला में उनकी रचनायें निरन्तर प्रकाशित होती रहीं। जिसके फलस्वरूप उनकी कीर्ति समस्त देश में फैलती गई।

निराला का अधिकांश जीवन कलकत्ता के बाद प्रयाग जैसी पावन नगरी में ही व्यतीत हुआ। जो हिन्दी के अनेक मनीषियों का गढ़ रहा जाता है और साथ ही तीर्थराज भी। उन्होंने अपने निवास के लिये स्थान भी अत्यधिक निकट और प्रेरणादायक चुना—गंगा का तट।

दारागंज प्रयागवासी महाप्राण निराला को पावन सुरसरि ने सर्वाधिक प्रभावित किया यह कहना अतिशयोक्ति न होगी।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से निराला की भेंट

अचानक एक दिन निराला से अपने जीविका-दाता स्वामी से कुछ विवाद हो गया और फिर स्वाभिमानी निराला ने नौकरी त्याग दी।

वे रियासत की नौकरी छोड़कर अपने गाँव चले गये।

परन्तु इस आघात निराला को साहित्य सेवा से विमुख नहीं कर सका। निराला की आर्थिक समस्या उनके समक्ष सदा बनी रही पर वे परास्त होते नहीं देखे गये।

उन्हीं दिनों निराला जी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से मिलने के लिये कभी-कभी कानपुर जाया करते थे। द्विवेदी जी उन दिनों सरस्वती से अवकाश प्राप्त कर वहीं निवास करते थे।

निराला की आर्थिक स्थिति पर विचार करके द्विवेदी जी ने कई स्थानों पर उनकी नौकरी के लिये लिखा-पढ़ी की परन्तु निराला तो आरम्भ से ही निराला थे। वे वहाँ जाने को तैयार न हुए और अन्त में पुनः रियासत के अनुरोध पर वहीं नौकरी स्वीकार कर ली।

द्विवेदी जी के विशेष अनुरोध पर ही उन्होंने समन्वय सम्पादन में जाना स्वीकार किया था।

यहाँ पर निराला जी ने रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया।

समन्वय में निरन्तर उनकी रचनायें प्रकाशित होती रहीं।

उन्होंने दो वर्षों तक समन्वय का सम्पादन कार्य भी किया।

निराला साहित्य के विभिन्न स्वरूप

कवि निराला

निराला के काव्य में विद्रोह की उत्कट प्रतिक्रियायें मिलती हैं। वे प्रारम्भ से ही क्रान्तिकारी भावनाओं के पोषक थे। उनकी इस विचारधारा का उनके साहित्य सृजन पर अत्यन्त स्पष्ट प्रभाव पड़ा। फलतः उनके काव्य में साहित्य का निरालापन

परम्परा सर्वथा परिवर्तित हो गई। काव्य को छन्द-बद्धता की जटिल शृंखलाओं से मुक्त होना पड़ा और उद्गारों को असीम अभिव्यंजना की पृष्ठभूमि मिली।

प्रख्यात विद्वान आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने कहा है 'रहस्य की कलात्मक अभिव्यक्ति की जो बहुविधि चेष्टायें आधुनिक हिन्दी में की गई हैं उनमें निराला की कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। कुछ कवियों ने तो रहस्यपूर्ण कल्पनायें भी की हैं किन्तु निराला के काव्य का मेरुदण्ड ही रहस्यवाद है।

वास्तव में जिस प्रकार निराला ने कभी अपने जीवन में किसी प्रकार का बन्धन स्वीकार नहीं किया उसी प्रकार उन्हें अपने काव्य में भी बन्धन स्वीकार न था। उनकी छन्द मुक्ति भावना साहित्य में एक युगान्तकारी प्रयोग था जिसे तत्कालीन साहित्य समझा न जा भर कर नताड़ा परन्तु बाद को जिसे निर्विवाद साहित्यमयता मिली और लोगों ने निराला को पहचाना। सही अर्थों में निराला कवि थे और विद्रोही कवि। विद्रोही इसलिए कि उनकी युगान्तकारी रचनाओं में विद्रोह का आमन्त्रण था ऐसे विद्रोह का आमन्त्रण जो काव्य के कायाकल्प और उत्थान के लिए था। परिमल की भूमिका में उन्होंने स्पष्ट किया है—मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता भी मुक्त होती है मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना।

अपनी मुक्त छन्द रचना के समर्थन [illegible] को उन्होंने जोड़ रक्खा और अन्त में उनके समस्त काव्य जगत् के समक्ष विरोधियों को घुटने टेकने पड़े।

बाद को अनेक कवि इस धारा से प्रभावित हुए और उन्होंने निराला की धारा का अनुसरण किया।

उनके मुक्तछन्दों में काव्य प्रवाह अलंकारिता मनोरमता शक्तिशाली भाव-व्यंजना के दर्शन होते हैं। वे इस क्षेत्र में बेजोड़ हैं। इनकी मौलिकता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि अबतक इनकी सफल नकल भी नहीं की जा सकी।

उपन्यासकार निराला

निराला महाकवि ही नहीं सफल उपन्यासकार भी थे। डा० रामविलास शर्मा

के गद्य में सामाजिक यथार्थ का चित्र निराला के गद्य साहित्य में और भी विशदता के साथ रखाओं और रंगों की और भी सजीवता के साथ मिलता है।'

अप्सरा उनका प्रथम उपन्यास है इसके बाद अलका निरुपमा, प्रभावती चोटी की पकड़ कुल्ली भाट काले कारनामे और बिल्लेसुर बकरिहा आदि का नाम आता है। इन सभी कृतियों में तत्कालीन सामाजिक जीवन का अत्यन्त यथार्थ चित्रण मिलता है। यथा इनि हास्य-व्यग्य आन्द और रोमास का सफल वर्णन मिलता है।

इन रचनाओं में वास्तुगत चित्रमयता के दर्शन होते हैं। पाठक चरित्रों को अपनी आँखों के सामने चलता फिरता अनुभव करता है। जमींदारों के निर्मम अत्याचारों से सड़ते हुए किसानों के चित्र सामने आ जाते हैं। अपने सतीत्व की रक्षा में हत्या करने में भी न डरने वाली स्त्रियों में जो त्यागमयी भावना होती है उसे उन्होंने खूब पहचाना है और उसका अत्यन्त हृदय स्पर्शी वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। वस्तु विन्यास पात्र चयन चरित्र चित्रण भाषा शैली सभी दृष्टियों से उनके उपन्यास अनूठे हैं।

कहानीकार निराला

निराला की कहानियों और रेखाचित्रों में हम समाज के कटु यथार्थ के दर्शन होते हैं।

कहानियों में चतुरी चमार लिली और सुकुल की बीवी आदि संग्रह इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। और रेखाचित्र के रूप में कुल्ली भाट और बिल्लेसुर बकरिहा आते हैं।

उनकी कहानियों में बंग कथा साहित्य का तत्कालीन रोमान्टिक छाया है परन्तु वर्तमान के यथार्थ से भी वे प्रभावित हैं। ग्राम्य जीवन के चरित्र चित्रण और वातावरण और परिस्थितियों का सफल चित्रण उनकी कथाओं में मिलता है। इन कहानियों में पाया आदर्शवाद नहीं है यथार्थ जीवन की झाकी है। इस प्रकार से उनकी ग्राम्य कहानियाँ आज की आचलिक कथाओं की प्रारम्भिक पृष्ठभूमि और मार्गदर्शन कही जा सकती हैं।

ऐसी ही सजीवता उनके रेखाचित्रों में भी मिलती है। वे अत्यन्त सजीव, स्वाभाविक और हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं। वातावरण का ऐसा सजीव वर्णन, पात्रों का ऐसा अनुपम चुनाव और वर्णन की ऐसी सूक्ष्म दृष्टि-भंगिमा बहुत कम साहित्यकारों में पायी जाती है।

व्यंग्यकार निराला

निराला ने साहित्य को मात्र गम्भीर गूढ़ कृतित्व से ही अलंकृत नहीं किया है वरन् उनकी रचनाओं में हमें चुभते हुए एवं यथार्थ तथा हास्योत्पादक व्यंग्य के भी दर्शन होते हैं।

उनका सशक्त व्यंग्यात्मक रूप उनके काव्य, उपन्यास और कहानियों में मिलता है और उनके निबन्ध भी व्यंग्य से अलग नहीं हैं।

कुकुरमुत्ता, गर्म पकौड़ी तथा बेला और नये पत्ते आदि रचनायें इसकी ज्वलन्त उदाहरण हैं।

सन् १९४ में उन्होंने बापू पर निम्नलिखित व्यंग्य किया—

बापू तुम मुर्गी खाते यदि
तो क्या भजते होते तुमको
ऐरे-गैरे नत्थू खैरे
सिर के बल खड़े हुए होते
हिन्दी के इतने लेखक-कवि
बापू यदि मुर्गी खाते तुम।

और कुकुरमुत्ता की ये पंक्तियाँ भी विस्मृत नहीं की जा सकतीं—

अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाया खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।

यह भमना कुकुरमुत्ते की गुलाब को नहा बल्कि निराश्रिता और निधना द्वारा पूजीवादी की की गई है।

जमा कि ऊपर कहा जा चुका है निराला का गद्य रचनाआ म भा व्यंग्य का गहरा पुट है परन्तु व्यंग्य का यह गहराई विशेषकर अस्पष्ट दृष्टिगत होता है।

उदाहरण क लिय न्म पत्त और पल्लव और सामाजिक पराधीनता आदि रचनाआ का ल सकत है। उनकी कहानिया और उपन्यासा म भी जहा तहा शोषण पूजावाद सामाजिक व्यभिचार और अम्नता क प्रति क्रान्तिकारी और चुभता हुआ व्यग्य दृष्टिगत हाता है।

यह व्यंग्य मात्र व्यंग्य ही नहा वरन एसी हृदयवधक चेतना भी है जा पाठक को तिलमिला दना है। निराला क व्यग्य निरथक और कवल मनारजक नहा कहे जा सकते।

सम्पादक निराला

निराला जी न कुछ समय तक समन्वय और मतवाला जस हिन्दी पत्रा का सम्पादन काय भी किया है। सन ३७ ३८ क आसपास वे लखनऊ क सुधा कार्यालय म काम करत थ। सम्पादन म मौलिकता उनका प्रमुख उद्देश्य था। उनक सम्पादन काल म सुधा का रूप काफी सुधरा। एक सजग सम्पादक क रूप म वे अथक परिश्रम करते थ।

मतवाला और समन्वय क अनक सस्मरण उनक साथ जुड हुय है।

उन्हा दिना निराला क नाम पर कला नामक पत्रिका भी यहीं आरम्भ हुई परन्तु अधिक दिना तक वह भा न चल सका। चकल्लस और उच्छृंखल आदि का प्रारम्भ भा उसा काल म हुआ था परन्तु बाद का व सब भा बन्द हो गय। इसस इन्कार नहा किया जा सकता कि निराला न सम्पादन परम्परा का एक सशक्त नाव रक्खा।

निबंधकार एवं समीक्षक निराला

निराला की कहानियों एवं निबंधों में इतना साम्य है कि उन्हें एक दूसरे से अलग कर पाना कठिन सा है। उनका निर्भय स्वाभिमान और सशक्त सृजनशक्ति उनके निबंधों में मिलता है। उनके निबंधों की भाषा और विवेचन शिल्प अत्यन्त प्रभावकारी और प्रबल लगता है। अपने निबंधों में उन्होंने बड़ी निर्भीकतापूर्ण शैली में विषयों का प्रतिपादन किया है। स्पष्टता, तर्क और किसी प्रकार की लाग-लपेट कहीं दिखाई नहीं पड़ती।

वे एक कुशल और सफल समालोचक भी थे। 'चाबुक', 'भारतीय राष्ट्र दर्शन' एवं 'हिन्दी साहित्य में उपन्यास' आदि रचनायें इसका प्रमाण हैं।

बंगला साहित्य, संस्कृत काव्य और अंग्रेजी समालोचना के वह बड़े अध्येता थे। इन सबके परिप्रेक्ष्य में वह हिन्दी में भी एक साफ-सुथरी स्वाभिमान भरी मौलिक दृष्टि उपस्थित करना चाहते थे जिसे हिन्दी के नव युग के कई परम्परापूजक रूढ़िवादी आलोचक नहीं समझते थे। वे केवल इतना भर मन में जानते थे कि अंग्रेजी रोमांटिक कविता हिन्दी में अवतरित नहीं हो सकती और न ही बंगला का मनोवैज्ञानिक हिन्दी आधार में आरोपित किया जा सकता है इसलिए वे हिन्दी की अपनी स्वतन्त्र समीक्षा निर्मित करना चाहते थे।

अनुवादक निराला

अनुवाद के क्षेत्र में उन्होंने संस्कृत से वात्स्यायन के कामसूत्र का, बंगला से रामकृष्ण परमहंस और भाषा में विवेकानन्द जी के आख्यानों, व्याख्यानों का और बंकिम ग्रंथावली का, रवीन्द्र पुस्तकों का तथा टैगोर की भी कुछ चुनिंदा कृतियों का अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनुवाद के अन्य फुटकर कार्य भी किये। इन अनुवादों में उन्होंने मूल रचनाकार की भावनाओं और अभिव्यक्तियों के साथ खिलवाड़ नहीं किया। भाषा की सीमा सुरक्षित रखना और अनुवाद को सरल सुगम और रोचक बनाना। अनुवाद के लिए उन्होंने ऐसी ही सम्पूर्ण और उत्कृष्ट रचनायें चुनीं जिनके प्रति उनकी पूर्ण आत्मिक श्रद्धा और रोचकता रही। वे बहुमुखी प्रतिभा

के घनी कलाकार थे साहित्य के जिस अंग को भी स्पर्श किया वह उपकृत और अलंकृत हो गया ।

निराला जी का निवास स्थान

प्रयाग में निराला जी के निवास स्थान को सौ डेढ़ सौ वर्षों के पहले का भवन निर्माण कला का नमूना कहना अतिशयोक्ति न होगा ।

उस मकान के दो हिस्से हैं । आगे वाले हिस्से में नयापन पता लग रहा है और पीछे वाले हिस्से में निराला जी रहते थे । उसी के समीप एक कोठरी है उसके आगे दालान और उसी में लगा हुआ रसोई घर । आँगन कच्चा तथा छोटा है । दीवारों की पुताई मिट्टी से की गई है । मकान की स्थिति अत्यधिक शोचनीय है । मगर महाकवि ने इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया । गर्मी के दिनों में वे नीचे की कोठरी का उपयोग करते थे । उस कोठरी में उनकी पुस्तकें तथा अन्य सामान अस्त-व्यस्त दशा में बिखरे पड़े हैं ।

निराला जी का रहन-सहन

प्रायः निराला जी घर में स्वयं अपने हाथों से झाड़ू लगाते थे । खुली हुई छत पर नंगे बदन कमर सधाये हुये वे मंजा प्याज आदि खाते । मकान में उनका रहन-सहन एक विरागी की भाँति था । जिस कमरे में वे रहते थे उसमें तीन चार मिट्टी के बर्तन रखे रहते थे । कुछ में आटा दाल चावल आदि रखा था और कुछ खाली पड़े रहते थे । बगल में एक मामूली सी दावात और कलम भी पड़ा रहता था जिससे महाकवि रचनायें करते थे । पत्र-पत्रिकायें और विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक पुस्तकें भी इधर उधर बिखरी दिखाई पड़ती थीं । एक ओर खूँटी पर खादी का पुराना कुर्ता टँगा रहता था दूसरी ओर कोने में पुराने जूते पड़े रहते थे । सामने सिरहाने पर कई वर्ष का टापक रखा रहता था और उसी के समीप तेल का लोटा रखा रहता था । कमरे के बीचोंबीच एक फटा पुराना मूढ़ा रखा था जिस पर महाकवि विश्राम करते थे ।

उनके कोठे की दशा अत्यंत शोचनीय है। छत नीचे को झुकी हुई है और उसकी कड़ियाँ जर्जर हो चुकी हैं। किसी ताख पर नमक बिखरा पड़ा है तो किसी पर मिर्चा और किसी पर लहसुन और सूखी धनियाँ। एक आलमारी में दो बर्तन दिखाई पड़ते हैं। इनमें से एक बर्तन घी रखने के काम में और दूसरा चूना भिगाने के काम में आता था। क्योंकि निराला जी को पत्ते वाली तम्बाकू के साथ चूने की बड़ी जरूरत पड़ती थी। ऐसी ही अस्त-व्यस्त दशा महाकवि के रसोई घर की भी थी। समूचा निवास स्थान कलाकार की लापरवाही का स्पष्ट संकेत देता था।

कभी कभी अधिक थके होने के कारण वे किसी को बाजार भेजकर अपनी मन पसन्द सब्जी मँगवा लेते। आगन्तुक अतिथि का स्वागत वे निराले ढंग से करते और अपने ही हाथों से उसके लिए भोजन तैयार करते। मेहमान के स्वागत के लिए वे दो तरह के नये साग तैयार करते। अपनी इच्छा से किसी का विरोध उन्हें स्वीकार नहीं होता था। कितनी ही देर क्यों न हो जाय वे बड़े इत्मीनान से विधिवत भोजन तैयार करते थे।

कभी-कभी लकड़ी बचने पर उन्हें गीली लकड़ियों से लेते थे और उन्हें आग जलाने में बड़ा परेशान होना पड़ता था। खाना धीरे-धीरे पकता रहता और वे रसोई छोड़कर अपने मेहमान अथवा भक्त को अपनी इच्छानुसार गीत, कविता और गजल आदि सुनाते रहते। मूड आने पर कभी कोई कविता प्रकाशन के लिए भिजवा देते।

उनकी रसोई लगभग ५, ६ घण्टे में तैयार होती थी। पहले वे बड़ी आत्मीयता और स्नेह से मेहमान को भोजन कराते तत्पश्चात स्वयं भोजन करते।

निराला का शारीरिक सौंदर्य

स्कूलों की बाढ़ में भी निराला की पहचान बड़ी सरल आसान थी। उनका मस्तक कोलिदास किसी से अनजाना नहीं था।

जिस आदमी ने भी निराला जी को देखा वह बच्चा हुआ, चाहे जवान और बड़े बुढ़ापे सभी के आंख उनसे बड़ा प्रेम और आश्चर्य से उन्हें निहारता रहा

जाता। उनमें विचित्र आकर्षण था, अनुपम हृदयस्पर्शी सौंदर्य और मुग्धामयी सात्विकता थी।

उनके मुखमण्डल पर स्निग्ध तेज विद्यमान था। उनका सामान्य जन दुर्लभ लम्बा कद, मांसल और चौड़ा वक्षस्थल, मल्लों जैसे पुष्ट स्कन्ध और लम्बी लम्बी अंगुलियों से युक्त मांसल भुजायें उनके शारीरिक सौष्ठव के सजीव रूप थे।

उनके नेत्र दीर्घायत, गम्भीर तथा कुछ रक्तिम, ओजस्वी तथा चिंतन से परिपूर्ण थे। यौवनावस्था में रखाये गये लम्बे लम्बे बाल और घनी बढ़ी हुई दाढ़ी यह सभी कुछ मिलकर व अपनी अटपटी वेशभूषा और अटपटी वाणी के साथ प्रयाग निवासियों के लिये ही नहीं वरन हिन्दी संसार के लिए अविस्मरणीय रहेंगे।

जिसने एक बार भी, कुछ क्षणों के लिये ही निराला के सम्पर्क का सौभाग्य प्राप्त किया है, वह निराला को कभी भूल नहीं सकता।

उनके सौम्य व्यवहार और हृदयस्पर्शी वार्तालाप में जो जादू था वह युगों युगों तक वंदनीय रहेगा।

निराला और उनके मेहमान

दिसम्बर का महीना था। नौ बजे प्रातःकाल एक साहित्यकार निराला जी के यहाँ पहुँचा। मन में संकोच और भय था फिर भी साहस समेट कर उसने द्वार खटखटाया। निराला जी से उसका परिचय मामूली था और अपने आने की कोई सूचना भी उसने पत्र में न दी थी अतएव उसका संकोच स्वाभाविक ही था किन्तु प्रयाग में कहाँ ठहरेगा? इस समस्या के कारण वह महाकवि के द्वार पर आया। उसे महाकवि की सहृदयता और आत्मीयता पर भरोसा था।

द्वार खुला। महाकवि बाहर आये और आगन्तुक को बिस्तर ऊपर ले जाने का आदेश दिया। आगन्तुक ने चरण स्पर्श किये फिर बिस्तर उठाकर ऊपर ले गया।

उन्होंने कहा, "यह झाड़ू है, स्थान साफ करके बिस्तर यहाँ लगा लो। शाम को तख्त पर बिछा लेना।

आगन्तुक ने तत्क्षण उनकी आज्ञा का पालन किया।

बिस्तर लगा कर खुली छत पर आया तो देखा कि निराला जी एक तख्त पर बैठे बैठे प्याज काट रहे है। वह आश्चर्यचकित होकर सब कुछ देख रहा था।

महाकवि के घर की दयनीय स्थिति और उनके हृदयस्पर्शी व्यक्तित्व का साक्षिक स्वरूप।

कुछ देर बाद निराला जी ने उससे कहा मैं थक गया हूँ। तुम बाजार जाकर आलू टमाटर और हरी मिर्च ले आओ तुम्हारे लिए एक तरकारी और बन जायगी।

फिर उसके हाथ पर उन्होंने एक दुअन्नी रख दी। वह चाहता था कि उन्हें पैसा देने से मना कर दे परन्तु वह जानता था कि अपनी इच्छा से वे किसी प्रकार का विरोध नहीं सहते अतएव चुपचाप बाजार चला गया। उस समय दिन के १० बजे का समय था।

जब वह लौट कर आया तो निराला जी चौके में थे। तीन तरकारियाँ और दालियाँ बना रहे थे। उसने कहा कि नाश्ते में दालियाँ बना दूँ परन्तु उन्होंने यह स्वीकार नहीं किया और खाना लकड़ियाँ फूँक फूँक कर खाना बनाते रहे। थोड़ी देर में राम छोटकर आये और उससे एक गजल की प्रतिलिपि कराकर नयागान्धिय बम्बई को भिजवा दी।

चार-पाँच घण्टे बाद लगभग ४ बजे उनका भोजन तयार हुआ। सब प्रथम उन्होंने अपने मेहमान को खिलाया तत्पश्चात अपने पड़ोसी श्री अनिलकुमार मुखर्जी को और सबके बाद में स्वयं भोजन किया। भोजन से निवृत्त होकर उन्होंने आगन्तुक मेहमान को शहर घूम आने का आदेश दे दिया और रास्ते पर शहर का एक रंगा नक्शा उसे बना कर दे दिया ताकि वह रास्ता न भूले।

शहर की सैर आठ बजे के करीब जब वह लौटा तो लगा कि वह इन्तजार कर रहे हैं। देखते ही बोले आओ पहले खा लो। दो दालियाँ रखी हैं। एक तुम ला रहे हो। खाने के बाद नींद अच्छी आयगी।

दूसरे दिन ६ बजे प्रातः उनकी चारपाई के निकट गया। वे घूमने के लिए जा रहे थे। वह लौट कर आया। बात नहीं आई

उसने कहा — बहुत अच्छी तरह — और उनके साथ चल पड़ा। उस समय उनके सिर पर एक पुराना ऊनी टोप था जिसे वे गले तक ओढ़कर खड़े थे। कमर पर मैला सा तहमद था और पैरों में बाटा का बना पुराना रबड़ वाला जूता था जिसका पिछला हिस्सा नदारद था। उसमें उनके पैरों की बिवाइयाँ साफ नजर आती थीं। हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि निराला और इस वेष में ? किसने अनुमान लगाया होगा कि इसके पास ओढ़ने के कपड़े न होंगे, वह हाथ से खाना पकाता होगा और बीमारी की दशा में पानी के लिए तरसता रह जाता होगा।

आगन्तुक साहित्यकार इसी चिन्ता विचार में डूबा हुआ था कि चाय वाले की दुकान आ गई। उन्होंने दो कुल्हड़ चाय ली और गंगा के बाँध की ओर चल दिये। रास्ते में निराला जी मौन गम्भीर बने जा रहे थे। अपने आप में डूबे और खोये से।

जब वे गंगा के बाँध पर पहुँचे तो उदित होते सूर्य की ओर देखते रह गये। सूर्य की किरणों के कारण कुहरा कम हो रहा था। वे गंगा, उसके कगार और उस पर कुहरे की पारदर्शी रश्मियों के सौन्दर्य को देखकर बोले— इलाहाबाद बड़ा सुन्दर नगर है। इतना अच्छा दृश्य अन्यत्र नहीं मिल सकता। सुबह तो है ही लेकिन इलाहाबाद की शाम भी बहुत अच्छी होती है। शाम को दूसरे बाँध पर चलेंगे। इतना कहकर चुप हो गये।

लौटते समय प्रगतिवादी साहित्य की बात चली तो वे स्वयं कहने लगे — प्रगतिवाद पर सबसे पहले मैंने लिखा है। इसे कोई नहीं जानता। क्या किया जाय दुनिया ऐसी है जो बिना Revelation के नहीं मानती। मैं घर चलकर तुम्हें दिखाऊँगा। इसके बाद वे पुनः चाय की दुकान पर आये और उन्होंने चाय पी। फिर दूसरा चक्कर गंगा किनारे का लगाया। इसके बाद घर लौटकर वे द्वार के सामने पड़े तख्त पर बैठ गये। थोड़ी देर में एक बंगाली सज्जन आ गये। उनसे बातचीत करते करते निराला जी फिर चायवाले के पास आये। दोनों ने फिर चाय पी। इतने में निराला जी का दूध देने वाला ग्वाला आ गया। उससे बातें करने के बाद उन्होंने अपने मेहमान से कहा — जाओ एक सेर दूध ले आओ।

वह ग्वाले के साथ घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में ग्वाले ने मजाक में कहा — बाबू जी! निराला जी निरे महात्मा हैं। इनकी कविता के आगे दूध पीने का भी

आगन्तुक ने तत्क्षण उनकी आज्ञा का पालन किया।

बिस्तर लगा कर सीधा छत पर आया तो देखा कि निराला जी एक तख्त पर बैठे प्याज काट रहे हैं। वह आश्चर्यचकित होकर सब कुछ देख रहा था।

महाकवि के घर की दयनीय स्थिति और उनके हृदयस्पर्शी व्यक्तित्व का सात्विक स्वरूप।

कुछ देर बाद निराला जी ने उससे कहा — मैं थक गया हूँ। तुम बाजार जाकर आलू टमाटर और हरी मिर्च ले आओ। तुम्हारे लिए एक तरकारी और बन जायगी।

फिर उसके हाथ पर उन्होंने एक दुअन्नी रख दी। वह चाहता था कि उन्हें पैसा देने से मना कर दे परन्तु वह जानता था कि अपनी इच्छा में वे किसी प्रकार का विरोध नहीं सहते अतएव चुपचाप बाजार चला गया। उस समय दिन में १ बजे का समय था।

जब वह लौट कर आया तो निराला जी चौके में थे। चार तरकारियाँ और रोटियाँ बना रहे थे। उसने कहा कि लाइये मैं रोटियाँ बना दूँ परन्तु उन्होंने यह स्वीकार नहीं किया और गीली लकड़ियाँ फूँक फूँक कर खाना बनाते रहे। सहसा वे बीच में रोटी छोड़कर आये और उससे एक गजल की प्रतिलिपि तैयार करवा कर नया साहित्य बम्बई को भिजवा दी।

चार-पाँच घण्टे बाद लगभग ६ बजे उनका भोजन तैयार हुआ। सर्व प्रथम उन्होंने अपने मेहमान को खिलाया तत्पश्चात् अपने पड़ोसी डा० अनिलकुमार मुखर्जी को और सबसे बाद में स्वयं भोजन किया। भोजन से निवृत्त होकर उन्होंने आगन्तुक मेहमान को नगर घूम आने का आदेश दे दिया और कागज पर नगर का एक ऐसा नक्शा उसे बना कर दे दिया ताकि वह रास्ता न भूले।

लखनऊ की सैर कर आठ बजे के करीब जब वह लौटा तो देखा कि वह इन्तजार कर रहे हैं। देखते ही बोले आओ खाना खा लो। ये रोटियाँ रखी हैं। एक तुम लो एक मैं। खाने के बाद नींद अच्छी आयेगी।

दूसरे दिन बजे प्रातः उनके कमरे के किवाड़ खुले। वे घूमने के लिए जा रहे थे। वह तो उठ बैठा। बोले 'चलो जी'

उसने कहा 'बहुत अच्छा तरुण' और उनके साथ चल पड़ा। उस समय उनके सिर पर एक पुराना ऊनी टोप था जिसमें गर्द का आडम्बर साथ थे। कमर पर मैली सी लुंगी थी और पैरों में बाटा का बहुत पुराना कपड़े वाला जूता था जिसका पिछला हिस्सा नदारद था। इससे उनके पैरों की बिवाइयाँ साफ नजर आती थीं। हिन्दी का युग प्रवर्तक कवि निराला और इस भेष में ? किसने अनुमान लगाया होगा कि इसके पास जाड़े के कपड़े न होंगे, वह हाथ से खाना पकाता होगा और बीमारी की दशा में पानी के लिए तरसता रह जाता होगा।

आगन्तुक साहित्यकार इसी चिन्ता विचार में डूबा हुआ था कि चाय वाले की दुकान आ गई। उन्होंने दो कुल्हड़ चाय ली और गंगा के बांध की ओर चल दिये। रास्ते में निराला जी मौन गंभीर चले जा रहे थे। अपने आप में डूबे और खोये हुए।

जब वे गंगा के बांध पर पहुँचे तो उदित होते सूर्य की ओर देखते रह गये। सूर्य की किरणों के कारण कुहरा कम हो रहा था। वे गंगा, उसके कगार और उस पर कुहरे को चीरती रश्मियों के सौन्दर्य को देखकर बोले—'इलाहाबाद बड़ा सुन्दर नगर है। इतना अच्छा दृश्य अन्यत्र नहीं मिल सकता। सुबह तो है ही, दिन में इलाहाबाद की शाम भी बहुत अच्छी होती है। शाम को दूसरे बांध पर चलेंगे।' इतना कहकर चुप हो गये।

लौटते समय प्रगतिशील साहित्य की बात चली तो वे स्वयं कहने लगे—'प्रगतिवाद पर सबसे पहले मैंने लिखा है। इसे कोई नहीं जानता। क्या किया जाय दुनिया ऐसी है जो बिना Revealition के नहीं मानती। मैं घर चलकर तुम्हें दिखाऊँगा।' इसके बाद वे पुनः चाय की दुकान पर आये और उन्होंने चाय पी। फिर दूसरा चक्कर गंगा किनारे का लगाया। इसके बाद घर आकर वे द्वार के सामने पड़े तख्त पर बैठ गये। थोड़ी देर में एक अजनबी सज्जन आ गये। उनसे बातचीत करते-करते निराला जी फिर चायवाले के पास आये। तीनों ने फिर चाय पी। इतने में निराला जी का दूध देने वाला ग्वाला आ गया। उससे बात करने के बाद उन्होंने अपने मेहमान से कहा 'आओ एक सेर दूध पी आओ।'

वह ग्वाले के साथ घर की ओर चल पड़े। रास्ते में ग्वाले ने मेहमान से कहा 'बाबू जी ! निराला जी निरे महात्मा हैं। इनकी कविता के आगे दूध पीने की भी

सुध नहीं रहती। दूध दे गया वैसे ही पड़ा रहा। दूसरे दिन मेरे सामने ही फेंका गया। भला ये भी अच्छा है बाबू साहब कि दूध फेंका जाय? मैंने बंद कर दिया। मुझ ऐसे महात्मा के पैसे खराब थोड़े ही करने हैं बाबू! तुम्हीं बताओ!

घर आ गया। ग्वाले से एक सेर भैंस का दूध लेकर कच्चा ही पी गया। वहाँ आग कहाँ थी जो गर्म करता।

थोड़ी देर में निराला जी भी घर आ गये। रसोई तो निराला जी की आज्ञा से मेहमान ने पकाई पर रोटियाँ स्वयं उन्होंने सेंकी।

आग फूँकते फूँकते तमाम राख उनके बालों में भर गई परन्तु इसकी उन्हें रंच मात्र भी परवाह न थी।

दो घण्टे में खाना बनकर तैयार हुआ। इसके बाद उन्होंने आसन के लिये एक अखबार बिछा दिया और फिर उस पर साग और रोटियाँ दीं। स्वयं जमीन पर बैठ कर खाने लगे और बोले वर्षों तक साहित्य साधना में मेरा यह भोजन रहा है।

हिन्दी जगत का सूर्य—निराला चूल्हा फूँके और सूखी बासी रोटियाँ चबाये और कभी-कभी निराहार गंगाजल पीकर ही संतोष कर सो जाय—यह गप्प और स्वप्न की बातें नहीं वरन सत्य हैं। उनका जीवन मजदूर का सा जीवन था।

रात में जिस समय मेहमान कच्चा दूध पी करवटें बदल रहा था और निराला के बारे में सोच रहा था तभी अचानक निराला की भयंकर हँसी ने शान्त वातावरण की निस्तब्धता भंग की। ऐसी हँसी मेहमान ने और कभी नहीं सुनी थी। उस हँसी के मर्म को निराला के अतिरिक्त और कौन समझता? फिर ये बड़ी देर तक अन्दर बाहर आते जाते रहे।

एक दिन मेहमान की तबीयत कुछ खराब थी। निराला ने खाना और चाय बन्द कर दिया और स्वयं दूध लाकर मेहमान के लिये रक्खा। फिर उसे साथ में लेकर घूमने निकले। गंगा के पुल के पार तक घूमने गये फिर लौट कर मेहमान से पूछा 'तुम थक गये होगे। आराम करो। मैं एक चक्कर और लगा आऊँ।' वे पुनः चल दिये।

दोपहर को लौट कर आये तो मेहमान को पास बैठकर लकड़ी लाने को कहा। लकड़ी लाकर दूध गरम किया और पीकर अखबार पढ़ने लगे मगर निराला जी न

तो दूध भी नहीं पिया और शाम तक भूखे ही रहे। फिर उन्होंने मूँग की दाल और रोटी बनाने का विचार किया।

निराला जी चौके में थे कि उसी समय एक प्रकाशक महाशय आ गये। वे निराला जी का एक उपन्यास छाप रहे थे। उपन्यास का नाम 'काले कारनामे' था और उसमें समाज तथा राजनीति का खोखलापन दिखाया गया था। उसकी भाषा शैली की प्रशंसा करते हुए प्रकाशक महाशय कहने लगे, 'निराला जी धीरे धीरे लिख रहे हैं। मूड में आकर लिखते हैं। एक लेखक भी दे रखा है लेकिन चीज़ ऐसी है जो बेजोड़ होगी।'

इसी समय गम्भीर होकर निराला जी ने कहा, 'साहित्य साधना से बनता है। हमें केवल रुपया तो कमाना नहीं है। साहित्य ऐसा बना है जो जनहित का हो और उसमें कुछ जान हो पर लोग समझते हों नहीं।'

महमान ने जाने के लिये बिदा माँगी तो बोले, 'अच्छा! बिस्तर बाँध लो और देखो खिचड़ी बनाई है, भूखे हो तो खा लो।'

महमान ने कहा, 'मैं खाकर आया हूँ' और फिर बिस्तर बाँधने लगा। तभी निराला जी ने कहा, 'ये साबुन तो रख लो' और फिर साबुन की आधी बट्टी उन्होंने महमान के सामने रख दी। तभी महमान को याद आया कि साबुन की आधी बट्टी कपड़े धोने में बच गई थी उसे भी उन्होंने लौटा दिया।

उस समय महमान की समझ में यह बात स्पष्ट रूप से आ गई कि महाकवि ने स्वयं कम्बल लेकर ओढ़ने से इन्कार क्यों कर दिया था और भयंकर सर्दी में स्वयं फटी चादर ही ओढ़ कर सो गये थे।

महमान ने उनकी चरण रज ली। आशीर्वाद प्राप्त किया और चल पड़ा।

वह रास्ते में सोचता हुआ चला जा रहा था। हमें निराला जैसा कलाकार चाहे मिल जाय पर निराला जैसा मानव नहीं मिल सकता। निराला का व्यक्तित्व अजर अमर है।

यह महमान हिन्दी के प्रख्यात लेखक श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' थे।

निराला के प्रति प्रयाग के लेखकों की उदासीनता

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है प्रसिद्ध लेखक श्री कमलेश जी को निराला जी के पास कई दिनों तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक दिन वे प्रयाग में अन्य प्रसिद्ध साहित्यकारों से मिलने के लिए गये तो उनमें से कई लोगों ने कमलेश जी से निराला जी का समाचार पूछा। इनके प्रश्न पर कमलेश जी को अत्यधिक आश्चर्य और दुःख हुआ। उन्होंने भड़क कर अत्यन्त पीड़ा भरी वाणी में कहा आश्चर्य है कि आप इलाहाबाद में रहते हैं और निराला जी का समाचार मुझसे पूछते हैं।

इस कड़े व्यंग्य और मर्मस्पर्शी वचन का प्रयाग के साहित्यकारों के पास कोई उत्तर न था।

उनकी इस उदासीनता से कमलेश जी ने अनुमान लगाया कि हिन्दी वाले अपने कलाकारों का कितना आदर करते हैं। यह हिन्दी के लेखकों का दुर्भाग्य ही तो था। उन्होंने महसूस किया कि निराला जी की वर्तमान स्थिति के लिये प्रयाग के ये ही साहित्यकार जिम्मेदार हैं जो निराला की कद्र करना नहीं जानते।

अपराजेय स्वर बोध संघर्ष

निराला जी हिन्दी के एक अनोखे ओजस्वी थे क्या काव्य में और क्या गद्य में उन्होंने एक ऐसा नाद का नाना-भाँति का भाव दिया है। एक शब्द भी इधर से उधर हटाया नहीं जा सकता। वे शब्दों के संगीत को जानते थे। उनकी शक्ति का स्रोत था अन्तर की प्रतिभा उत्तम था। ये कुछ पंक्तियाँ प्रख्यात साहित्यकार श्री अमृतलाल नागर के एक लेख से उद्धृत हैं जिसमें उन्होंने महाकवि निराला की अपराजेय जीवन की कथा कही है।

वास्तव में निराला जी अपराजेय स्वर थे और वास्तव में उनका सारा जीवन विषमता के साथ लड़ता रहा। वे स्वभाव से ही थे युग ने उन्हें अपने समय में कोई मान्यता नहीं दी और फिर भी किसी निराशा ने कभी आत्मविश्वास को च्युत नहीं किया।

उनका सम्पूर्ण जीवन अनेक विडम्बनाओं, विपत्तियों, कुण्ठाओं और संघर्षों से परिपूर्ण रहा है। उनके व्यक्तित्व की प्रकृति ने उन्हें सदा अभावग्रस्त और असन्तुष्ट

रक्खा। एकनिष्ठ साधक के रूप में वे जीवन भर तपते रहे और इसी तपाग्नि ने निराला को उनके जीवन के अन्तिम काल में विक्षिप्त बना दिया। परन्तु पराजय उन्होंने कभी स्वीकार नहीं की। उन्होंने बड़ी शान के साथ परिस्थितियों को झेला परन्तु परास्त होकर उनसे समझौता करने को कभी तत्पर नहीं हुये।

उनका शेष समय इसका अन्तिम संग्राम तक चला। अपने तई किसी प्रकार की आर्थिक सहायता दान और चन्दा उन्होंने स्वीकार नहीं किया। जिस शान के साथ ज़िन्दगी भर विपत्तियों से लड़े उसी शान के साथ मौत को भी वरण किया।

उनकी आन्तरिक विकलता, विकृति और कुंठा को लोगों ने पागलपन की संज्ञा दे डाली परन्तु किसी ने वास्तविक रूप में उनके जीवन काल में उनकी मान्यता को निष्पाप हृदय से स्वीकार नहीं किया।

हमारे सांस्कृतिक भविष्य का प्रतीक निराला साहित्य

निरन्तर पचास वर्षों तक निराला का विरोध करने के पश्चात जब पूँजीवादी और सामन्ती संस्कृति के अलम्बरदारों ने यह समझ लिया कि हिन्दी साहित्य संसार में उस बड़े ज्ञानी साधक की साधना को मिटा पाना सर्वथा असम्भव है तब वे तन मन से इसके सच्चे भक्त बन गये और उसे महामानव, महाप्राण आदि उपाधियों से विभूषित कर साहित्य मन्दिर में देवता की भाँति प्रतिष्ठित किया और उसके जय घोष के पश्चात कहा, यह हमारा देवता है इसकी पूजा आराधना का अधिकार केवल हमें है।

जन-साधारण के लिये निराला की अर्चना आराधना का निषेध है परन्तु यह ठेकेदारी एक मात्र इनकी भूल ही कही जायगी क्योंकि विशाल जन समूह की श्रद्धा और प्रेम की अवहेलना उनके वश की बात नहीं। साहित्य जगत में निराला के संघर्षों की जो रोमांचकारी और हृदय विदारक कथा कही गई है वह समस्त हिन्दी प्रेमियों और साहित्य सेवियों के लिये एक खुली चुनौती है।

महाकवि ने अपने एक गीत में विरोधियों को लक्ष्य करके स्वयं ही कहा है—

निराला के प्रति प्रयाग के लेखकों की उदासीनता

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है प्रसिद्ध लेखक श्री कमलेश जी को निराला जी के पास कई दिनों तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन दिनों वे प्रयाग में अन्य प्रसिद्ध साहित्यकारों से मिलने के लिये गये तो उनमें से कई लोगों ने कमलेश जी से निराला जी का समाचार पूछा। उनके प्रश्न पर कमलेश जी को अत्यधिक आश्चर्य और दुःख हुआ। उन्होंने क्षुब्ध होकर अत्यन्त पीड़ा भरी वाणी में कहा — आश्चर्य है कि आप इलाहाबाद में रहते हैं और निराला जी का समाचार मुझसे पूछते हैं।

इस कटु सत्य और मर्मवेधी कथन का प्रयाग के साहित्यकारों के पास कोई उत्तर न था।

उनकी इस उदासीनता से कमलेश जी ने अनुमान लगाया कि हिन्दी वाले अपने कलाकारों का कितना आदर करते हैं। यह हिन्दी के लेखकों का दुर्भाग्य ही तो था। उन्होंने महसूस किया कि निराला जी की वर्तमान स्थिति के लिये प्रयाग के ये ही साहित्यकार जिम्मेदार हैं जो निराला जी की कद्र करना नहीं जानते।

अपराजेय स्वर : दीर्घ संघर्ष

निराला जी शब्दों के एक अनोखे जौहरी थे। क्या काव्य में और क्या गद्य में उन्होंने एक एक शब्द को लाल गौहर की भाँति जड़ा है। एक शब्द भी इधर से उधर हटाया नहीं जा सकता। वे शब्दों के मिजाज को जानते थे। उनकी शक्ति को परखने की अद्भुत प्रतिभा उनमें थी। *ये चन्द पंक्तियाँ प्रख्यात साहित्यकार* श्री अमृतलाल नागर के उस लेख से उद्धृत हैं जिसमें उन्होंने महाकवि निराला की अपराजेय आवाज को सलामी दी है।

वास्तव में निराला जी अपराजेय स्वर थे और वास्तव में उन्हें बड़ी निर्ममता के साथ [illegible] गया। वे यथार्थ में जो थे युग ने उस रूप में उन्हें मान्यता नहीं दी और फिर स्वाभिमानी निराला ने कभी आत्मविज्ञापन का [illegible] नहीं रचा।

उनकी साहित्य यात्रा अनेक वितृष्णाओं, विसंगतियों, कुण्ठाओं और संघर्षों से परिपूर्ण रही है। उनकी न झुकने की प्रवृत्ति ने उन्हें सदा अभावग्रस्त और असन्तुष्ट

रक्खा। एकनिष्ठ साधक के रूप में वे जीवन भर तपते रहे और इसी तपाग्नि ने निराला को उनके जीवन के अन्तिम काल में विक्षिप्त बना दिया। परन्तु पराजय उन्होंने कभी स्वीकार नहीं की। उन्होंने बड़ी शान के साथ परिस्थितियों को झेला परन्तु परास्त होकर उनसे समझौता करने को कभी तत्पर नहीं हुये।

उनका शेष संघर्ष उनकी अन्तिम श्वास तक चला। अपने तईं किसी प्रकार की आर्थिक सहायता, दान और चन्दा उन्होंने स्वीकार नहीं किया। जिस शान के साथ ज़िन्दगी भर विपत्तियों में रहे उसी शान के साथ मौत का भी वरण किया।

उनकी आन्तरिक विकलता, विकृति और कुण्ठा को लोगों ने पागलपन की संज्ञा ही दी, परन्तु किसी ने वास्तविक रूप में उनके जीवन काल में उनकी मान्यता को निष्पाप हृदय से स्वीकार नहीं किया।

हमारे सांस्कृतिक भविष्य का प्रतीक निराला-साहित्य

निरन्तर पचास वर्षों तक निराला का विरोध करने के पश्चात् जब पूँजीवादी और सामन्ती संस्कृति के कर्णधारों ने यह समझ लिया कि हिन्दी साहित्य संसार में इस युग-द्रष्टा मानव की साधना को मिटा पाना सर्वथा असम्भव है तब वे तन मन से उनके सच्चे भक्त बन गये और उसे महामानव, महाप्राण आदि उपाधियों से विभूषित कर साहित्य मन्दिर में देवता की भाँति प्रतिष्ठित किया और उनके देह त्याग के पश्चात् कहा 'यह हमारा देवता है' इसकी पूजा आराधना का अधिकार केवल हमें है।

जन-साधारण के लिए निराला की अर्चना आराधना का विषय है परन्तु यह ठेकेदारी एक मात्र इनकी भूल ही कही जायगी क्योंकि विशाल जन-समूह की श्रद्धा और प्रेम की अवहेलना इनके वश की बात नहीं। साहित्य जगत में निराला के संघर्षों की जो रोमांचकारी और हृदय विदारक कथा कही गई है वह समस्त हिन्दी प्रेमियों और साहित्य सेवियों के लिए एक खुली चुनौती है।

महाकवि ने अपने एक गान में विरोधियों को लक्ष्य करके स्वयं ही कहा है—

निराला के प्रति प्रयाग के लेखकों की उदासीनता

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है प्रसिद्ध लेखक श्री कमलेश जी को निराला जी के पास कई दिनों तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक दिन वे प्रयाग में अन्य प्रसिद्ध साहित्यकारों से मिलने के लिये गये तो उनमें से कई लोगों ने कमलेश जी से निराला जी का समाचार पूछा। उनके प्रश्न पर कमलेश जी को अत्यधिक आश्चर्य और दुःख हुआ। उन्होंने क्षुब्ध होकर अत्यन्त पीड़ा भरी वाणी में कहा — आश्चर्य है कि आप इलाहाबाद में रहते हैं और निराला जी का समाचार मुझसे पूछते हैं।

इस कटु सत्य और मर्मभेदी कथन का प्रयाग के साहित्यकारों के पास कोई उत्तर न था।

उनकी इस उदासीनता से कमलेश जी ने अनुमान लगाया कि हिन्दी वाले अपने कलाकारों का कितना आदर करते हैं। यह हिन्दी के लेखकों का दुर्भाग्य ही तो था। उन्होंने महसूस किया कि निराला जी की वर्तमान स्थिति के लिये प्रयाग के ये ही साहित्यकार जिम्मेदार हैं जो निराला की कद्र करना नहीं जानते।

अपराजेय स्वर : दीर्घ संघर्ष

निराला जी शब्दों के बड़े अनोखे जौहरी थे — क्या काव्य में और क्या गद्य में उन्होंने एक एक शब्द को लाला-गौहर की भाँति जड़ा है। एक शब्द भी इधर से उधर हटाया नहीं जा सकता। वे शब्दों के संगीत को जानते थे। उनकी शक्ति को परखने की अद्भुत प्रतिभा उनमें थी। ये चन्द पंक्तियाँ प्रख्यात साहित्यकार श्री अमृतलाल नागर के उस लेख से उद्धृत हैं जिसमें उन्होंने महाकवि निराला की अपराजेय आवाज को मना दी है।

वास्तव में निराला जी अपराजेय स्वर थे और वास्तव में उनसे बड़ी निर्ममता के साथ लड़ा गया। वे यथार्थ में जीते थे, युग ने जिस रूप में उन्हें मान्यता नहीं दी और फिर स्वाभिमानी निराला ने कभी आत्मविज्ञापन का शौक नहीं रखा।

उनकी साहित्य यात्रा अनेक वितृष्णाओं, विसंगतियों, कुण्ठाओं और संघर्षों से परिपूर्ण रही है। उनकी न झुकने की प्रवृत्ति ने उन्हें सदा अभावग्रस्त और असन्तुष्ट

रक्खा। एकनिष्ठ साधक के रूप में वे जीवन भर तपते रहे और इसी तपाग्नि ने निराला को उनके जीवन के अंतिम काल में विकृत बना दिया। परन्तु पराजय उन्होंने कभी स्वीकार नहीं की। उन्होंने बड़ा शान के साथ परिस्थितियों को झेला परन्तु परास्त होकर उनसे समझौता करने को कभी तत्पर नहीं हुए।

उनका दीर्घ संघर्ष उनकी अन्तिम श्वास तक चला। अपने तई किसी प्रकार की आर्थिक सहायता दान और चन्दा उन्होंने स्वीकार नहीं किया। जिस शान के साथ जिन्दगी भर विपत्तियों से लड़े उसी शान के साथ मौन को भी वरण किया।

उनको आलोचकों ने विडम्बना विकृति और कुंठा का शिकार ने पागलपन की संज्ञा दे डाली परन्तु किसी ने वास्तविक रूप से उनके जीवन काल में उनकी महत्ता को निष्पाप हृदय से स्वीकार नहीं किया।

हमारे सांस्कृतिक भविष्य का प्रतीक निराला साहित्य

निरन्तर पचास वर्षों तक निराला का विरोध करने के पश्चात जब पूंजीवादी और सामंती संस्कृति के अनुयायियों ने यह समझ लिया कि हिन्दी साहित्य संसार में उस मस्त फकीर साधक को साधन या भिन्न पाना सर्वथा असम्भव है तब वे रातों रात उसके भक्त बन गए और उसे महामानव महाप्राण आदि उपाधियों से विभूषित कर साहित्य मन्दिर में देवता की भांति प्रतिष्ठित किया और उसके नाम छाप के पश्चात यही कहते हैं हमारा देवता है इसकी पूजा आराधना का अधिकार केवल हम हैं।

जन साधारण के प्रिय निराला की अर्चना आराधना का विरोध है परन्तु यह परम्परा तब मात्र उनकी भूल मानी जाएगी जबकि विशाल जन समूह की श्रद्धा और प्रेम की अवहेलना उनके वश की बात नहीं। साहित्य जगत में निराला के समर्थों की जो रामायण और हृदय विस्तारक कथा कही गई है वह समस्त हिन्दी प्रेमियों और साहित्य सविता के लिये एक खासा चनौती है।

महाकवि ने अपने एक गीत में विराधियों को लक्ष्य कर स्वयं ही कहा है—

समय क्या वे सकेंगे भारू मलिन मन
निशाचर तज हत रह जो वय जन ।
धन्य जीवन कहां मान प्रभातधन ।

भारू मलिन मन निशाचर तजहत वय जन आदि इन विशेषणो से महाकवि ने अपने विरोधियो को सम्बोधित कर उनका स्वागत किया है ।

इन्हा साहित्यिक ठकेदारो ने यह नारा लगाया कि निराला-साहित्य को जनता से दूर रखो । निराला रहस्यवादी साधक है और भारतीय सस्कृति इस रहस्य की साधना है ।

पूजीवादी सस्कृति के लिए सबसे बडी सफलता और सार्थकता यह है कि मनुष्य स्वार्थ युद्ध मे विजय प्राप्त करे और उसकी सबसे बडी असफलता और असार्थकता यह है कि दूसरो के दुख मे दुखी होकर वह अपने स्वार्थ को भूल जाय । महाकवि ने इस विषय मे स्वय ही अपनी भावनायें व्यक्त की हैं—

क्षण को न छीना कभी अन्न
मैं लख न सका वे दृग विपन्न
अपने आसुओ अत विम्बित
देखे है अपने ही मुख चित ।

कवि ने दूसरो की सम्पत्ति हडप कर आनंदोत्सव करने की भावना कभी नही रक्खी अतएव अपने आसुओ मे उसने सदैव अपना ही मुख और हृदय झलकते देखा । महाकवि के ये उच्चतम विचार यद्यपि कि पूजीवादी वर्ग की भावना पर कुठाराघात करते है परन्तु मानव समाज के लिए ये अमर आदर्श है ।

निराला के विरोधियो ने केवल उनको क्रान्तिकारी महत्व ही समझा अतएव जनता मे ऐसी विचारधारा को पनपने फैलाने का प्रयत्न किया । उन्होने निराला का विरोध करने मे कोई कसर बाकी न छोडी ताकि साधारण जन वर्ग उनसे प्रभावित न हो ।

उनके विरोध मे तत्कालीन कई पत्रिकाओ मे लेख छाप गये और उन्हें कम्युनिस्ट कहा गया ।

लेकिन जिस नतिक मू्या और तत्वा क लिय निराला कभी लड़ा था जनता उन्हा क लिय आज लड़ रही है। उनका दग भक्ति का आधार व्यक्तिगत मम्पत्ति नहा थी। यही कारण है कि उनके जनवादी विचार गरीब मेहनतकश जनता की सस्कृति के अत्यधिक समीप रहे।

य सारी बातें वास्तविक रूप म सिद्ध करती है कि वे हमारे सास्कृतिक भविष्य क अग्रदूत थ।

आज जनता असली-नकली का भेदभाव समझाकर अपने कट अनुभवा की पोटला खोलकर एकता एव सगठन के मार्गो पर गतिशील है। उस वाल्मीक तुलसी और व्यास म विरासत क रूप म जो कुछ प्राप्त हुआ है उसी क आधार पर वह सास्कृतिक निर्माण का कारबार सभालेगी।

निराला जी सदव निःस्वार्थ भावना म ऊच-नीच का भेदभाव मिटाकर सच्चा मानवता का कायम रखन क लिये लड़त रहे।

वतमान शासक वग जो आज सिंहासनारूढ है निराला न उसका वास्तविक रूप स्वतन्त्रता क पूव ही समझ लिया था अतएव उन्होंने पूजीवादी नताओ की आलोचना करते हुय १९३१ म लिखा—

अभी तो दरिद्र भारत क नेता भी धनी है। जब नेता लोभ का पूर्ण त्याग न कर सके वहा अनुयायी अथवा धन क बड़-बड़ उत्तराधिकारी कम क्या अधिकार छोड़ेंगे? अभी तो मन्दिरा म रहकर कुटिया का मर्म करके देहात दशन और देहातियो का उपदश दत है—पुन मोटर पर भ्रमण करत हुय।

यह शिक्षा देना नहीं शिक्षा का एक हास्य है।

उपन्यास सम्राट मुशी प्रेमचन्द का भाति निराला जी भी दूरदर्शी और निर्भीक साहित्यकार थ जिन्होंने अपन वितन भूत म भविष्य का दशन कर लिया था। शासक वर्ग द्वारा निराला की वास्तविकता का उपेक्षा और पूजीवादी नेताओ द्वारा निराला का मान्यताओ का सठजान का यही रहस्य था।

निराला का समूचा साहित्य साम्राज्यवादी शोषण का निमम आलोचना करता है। उनके अप्सरा एव अलका आदि उपन्यासा म अग्रेजी राज क प्रति घृणा एव

जनता द्वारा उसके सक्रिय विरोध का पूर्ण आभास मिलता है। दिन व दिन जनता का जनवादी स्वर पुष्ट ही होता गया।

उनकी "देवी", "चतुरी चमार", "कुल्ली भाट" आदि रचनाओं में शोषित जनता का मार्मिक चित्रण हुआ है।

उनकी प्रभावती में हम मध्यकालीन समाज के सामन्ती शोषण का रूप देखते है। राम की शक्ति पूजा और तुलसीदास काव्य संकलन में नयी वीर भावना को प्रस्फुटित किया गया है।

स्मरणीय सत्य है कि निराला विद्रोह के कवि रहे हैं। उनकी वाणी सौन्दर्य एवं प्रेम की जन सुलभ कामना प्रकट करती है। यदि वे एक ओर विप्लव का गर्जन करते हैं तो दूसरी ओर जूही की कली के स्वप्निल संसार में भी तरल राग पस्त हैं।

वे जीवन भर अपराजेय कवि रहे। आज भी उनका निरन्तर संघर्ष, साहस, उत्साह और असीम शक्ति हमारे लिए प्रेरणा का सर्वाधिक प्रभावशाली प्रतीक है।

एक बार अपनी अस्वस्थता की दशा में तुलसी जयन्ती के पुनीत अवसर पर उन्होंने कहा था "हम टूट गये हैं। टूट टूट चुके हैं लेकिन सब नहीं है और न हिन्दुस्तान का जनता झुका है। शरीर है बन्दी बना है सताई हुई है लेकिन उसका सर नहीं झुका। और ऐसी ही जनता के प्रतिनिधि कवि हैं निराला।

निराला जी सवा साल से बीमार थे

सन ६ के अगस्त मास से निराला जी अस्वस्थ हो गये। उनकी मानसिक दशा अत्यधिक बिगड़ गई थी। अपनी कोठरी का दरवाजा बन्द करके वे नग्नावस्था में पड़े रहते थे। उनकी बातें असंगत और बहकी बहकी होती थी। कुछ दिनों तक उनकी ऐसी ही स्थिति रही। दवा आरम्भ हुई तो उनकी मानसिक दशा में कुछ सुधार हुआ किन्तु शारीरिक व्याधियों के कारण वे दुर्बल होते चले गये। डाक्टर ने बताया कि उनकी बीमारी असाध्य और गम्भीर हो चुकी है। वे गठिया और जलोदर रोग से ग्रसित थे। सारे शरीर में सूजन आ गई थी। इस रोग के कारण यकृत विकार और हृदय के पास रक्त संचार में रुकावट होती थी।

खासी बन्न आती थी और साम लेने म तकलीफ होती थी। मुश्किल स कभी घण्ट आध घण्ट आँख लग पाती थी। हर्निया तो उनका पुराना मर्ज था ही। उस ममय तीन-तीन डाक्टरों का इलाज चल रहा था। इसी बीच उत्तर प्रदेश क भूतपूर्व मुख्य मंत्री डाक्टर सम्पूर्णानन्द प्रयाग आये और उन्होंने निराला जी को देखा तथा परामर्श दिया कि यदि निराला जी अस्पताल में जाना चाहें तो उनके लिए निवास स्थान पर ही चिकित्सा की उचित व्यवस्था की जाय। मुख्य मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त ने भी सेवा और सहायता का वचन दिया।

लखनऊ स प० श्री नारायण चतुर्वेदी भी आये और निराला जी की सेवा-व्यवस्था की देख भाल की। डा० रामसनेही लाल शर्मा तथा प० कमलापति त्रिपाठी भी महाकवि को देखने आये। श्रीमती महादेवी वर्मा और श्री सुमित्रानन्दन पन्त को देखकर निराला जी के अस्फुट स्वर फूटे —

हम रहें न रहें
तुम सलामत रहो हजार बरस।

इन्हीं दिनों भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद भी प्रयाग आये हुए थे किन्तु उन्हें महाकवि को देखने का अवकाश नहीं मिल सका। मिलता भी कैसे। व्यस्तता के कारण फिर भारत के राष्ट्रपति महाकवि की कुटिया में ? अजीब बात थी।

उपयोगी दवाओं और सेवा-सुश्रूषा के कारण निराला जी कुछ कुछ स्वस्थ हो चले किन्तु कुछ स्वस्थ होते ही उन्होंने दवाओं का उपयोग बन्द कर दिया।

१। जुलाई ६१ से पुनः वे अस्वस्थ होने लगे। उनके पैरों में सूजन आने लगी। दवा-दारू जो की फिर चिन्ताओं में जा पड़े। उन्होंने तुरन्त प० श्रीनारायण चतुर्वेदी को इस स्थिति की सूचना दी और कहा कि मुख्यमंत्री से कहकर किसी निपुण शास्त्री डाक्टर को बुलाकर निराला जी को दिखाना चाहिए।

मुख्य मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त के आदेश से लखनऊ मेडिकल कालेज के डाक्टर श्री के० एन० गोड़ ८ अगस्त ६१ को निराला जी को देखने के लिए प्रयाग पधारे। उन्होंने निराला जी के निजी चिकित्सक श्री वृजकिशोरीलाल द्वारा स्थिति की जानकारी की और निराला जी को देखा। प्रयाग के सिविलसर्जन तथा एलेक्स सर्जन डा० गुप्ता भी उस समय परामर्श के लिए उपस्थित थे।

इन लोगों ने निराला जी के खून की जाँच की और हृदय का एक्स-रे करके कुछ नयी दवायें दीं तथा उनके पेट से पानी निकालने की राय दी।

उन्हें दवायें दी गयीं। खून की जाँच हुई मगर रात में उनकी बेचैनी बढ़ गयी और उन्होंने डाक्टरी दवायें प्रयोग करने से इन्कार कर दिया।

कमलाशंकर जी ने उनसे दवायें लेने का बहुतेरा आग्रह किया मगर वे किसी भी कीमत पर राजी नहीं हुये और वे बोले — पहले वाली दवायें ला दो। ये दवायें नहीं जहर हैं।

पहले वाली दवा नप्पान के इन्जेक्शन थे जिससे उनको पेशाब अधिक मात्रा में होता था और पेट का सूजन कम हो जाता था किन्तु उस इन्जेक्शन से गुर्दे में खराबी आने का भय था इसलिये कुछ डाक्टरों की राय वह इन्जेक्शन देने की नहीं थी। लेकिन निराला जी की जिद थी कि वे वही इन्जेक्शन लगवायेंगे। इसी उधेड़बुन में उनका उपचार बन्द हो गया। उनकी बीमारी दिन ब दिन बढ़ती चली गई—अत्यन्त गम्भीर और चिन्ताजनक होती गई।

वास्तविकता तो यह है कि पिछले ११-१२ वर्षों से महाकवि जब जब बीमार पड़े किसी ने उनके इलाज और सेवा-सुश्रुषा के प्रति गम्भीरतापूर्वक रुचि नहीं दिखाई। उनके कितने ही निकट परिचित भी इस ओर से उदासीन ही रहे। राजनैतिक लोगों से तो किसी प्रकार की आशा निरर्थक थी ही किन्तु साहित्यिक बन्धुओं ने भी महाकवि की उपेक्षा की।

कमलाशंकर जी की परेशानी दिनों दिन बढ़ रही थी। एक दिन निराला जी ने उनसे कहा—यदि तुम मुझे वे ही इन्जेक्शन नहीं लगवाओगे तो मेरे पास कुछ रुपये हैं मैं स्वयं ही वे इन्जेक्शन लगवा लूँगा।

कमलाशंकर जी ने धैर्य देते हुये कहा—मैं आपके लिये इन्जेक्शनों की व्यवस्था कर रहा हूँ डाक्टरों से बातचीत हो रही है आपको शीघ्र ही इन्जेक्शन लगेंगे।

डाक्टरों की राय से पुनः उन्हें नप्पान के इन्जेक्शन लगने लगे मगर पहले की अपेक्षा इनकी मात्रा कम कर दी गई थी।

डाक्टरों की राय में तब तक निराला जी के पेशाब में विशेष विकार न उत्पन्न

ना जाय तब तक इस इंजेक्शन के लगने में कोई हर्ज नहीं था। इंजेक्शन लगने के पूर्व उनके पेशाब की जाँच करा ली जाती थी।

इस उपचार से उनका शोथ पुन घटने लगा। दो महीने के बाद वे काफी कुछ स्वस्थ हो गये।

निराला जी की अस्वस्थता के अंतिम मार्मिक दिन

अपनी छोटी सी कोठरी में महाकवि का जीवन धीरे धीरे बुझता सा जा रहा था। वे पीड़ा से छटपटाते हुए करवटें बदलते रहते थे। जिज्ञासा और मौन में डूबे लगते हुए था। वे किसी भी कीमत पर अस्पताल जाने को राजी न थे जबकि अस्पताल जाना उनके लिये अत्यन्त आवश्यक था किन्तु उनके सच्चे सेवक और शिष्य श्री कमलाशंकर से उनका यह मार्मिक क्रन्दन देखा न जाता था बेचारे शोक में डूबे ह्य का उपाय सोच रहे थे।

निराला जी एकाएक अपने बिस्तर पर उठ बैठे और बोले—कमलाशंकर मुझे भी जाने को कोई देखो तो तो मैं न जाता होता। राघव से मुझे दिखा दो मैं भी जाऊँगा।

राघव देखा इस समय और भी भयानक था। घबराये हुए कमलाशंकर ने तुरन्त फोन करके डाक्टर को बुलाया और फिर सरस्वती सम्पादक श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी को फोन द्वारा निराला जी की गम्भीर स्थिति बताई। चतुर्वेदी जी उन दिनों लखनऊ में थे। वे महाकवि के अत्यन्त निकट मित्र और शुभचिन्तक थे।

इस समय निराला जी का हर्निया बड़ी बुरी स्थिति में उतर आया था। उनके बढ़े हुए उदर भाग में नाभि के करीब आंत बच्चे की तरह बाहर निकला हुआ था। रात भर हर्निया को दोनों हाथों से पकड़े हुए वे दर्द से छटपटाते रहे। असह्य दर्द से व्याकुल होकर वे रो पड़े।

श्रीनारायण चतुर्वेदी जी ने कमलाशंकर को निराला जी को तत्काल ही अस्पताल ले जाने का आदेश दिया—किन्तु वे अस्पताल जाने को कतई तैयार न थे। उनको

अन्तिम में उन्हें अस्पताल ले जाना सर्वथा असम्भव था। डाक्टरों ने भी उनसे अस्पताल चलने का अनुरोध किया था किन्तु उनका एक ही उत्तर था—

I want to die in peace. I will not go to hospital. I will keep my vanity even at the cost of my life.

कमलाशंकर ने पुनः फोन उठाया और श्रीमती महादेवी वर्मा, नगर प्रमुख श्री बालकृष्ण राव, डा० उदयनारायण तिवारी, शान्ति प्रेस के मैनेजर श्री त्रिलोकप्रसाद जिज्ञासु और निराला जी के शिष्यों श्री जयगोपाल मिश्र तथा डा० शिवगोपाल मिश्र को उनकी गम्भीर स्थिति की सूचना दी।

सारे मुहल्ले भर में भी खबर फैली और लोग महाकवि के निवास स्थान की ओर दौड़ पड़े। भीड़ की भीड़ जमा हो गई। स्त्रियाँ, बच्चे, वृद्ध कौन ऐसा था जिसके चेहरे पर विषाद की छाया न थी, जिसकी आँखों से आँसू न टपक रहा हो। वे सभी के तो प्यारे थे। उस समय लोगों के मुँह पर एक ही बात थी—हाय! यह क्या हुआ!

जिज्ञासु ने आते ही कमलाशंकर जी से पूछा—आपका पत्र कल ही तो मुझे मिला था जिसमें आपने लिखा था कि निराला जी अब पहले से काफी स्वस्थ हो गये हैं, उनके उपचार के लिए इस समय अधिक व्यय की आवश्यकता नहीं है। आज सहसा क्या हो गया?

वास्तव में निराला जी स्वस्थ हो चले थे। उनके शरीर का सूजन और पेट का दर्द दूर हो गया था। वे खान-पान में संयम रखते थे। केवल फल और दूध इस्तेमाल करते थे। पूरे दो महीने ऐसे ही गुजारे मगर कमजोर अत्यधिक हो गये थे। दुर्बलता के कारण हर्निया एकदम प्रकट हुआ और हर्निया ने ही उन्हें धोखा दिया।

श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री बालकृष्ण राव तथा जयगोपाल जी ने उनसे अस्पताल चलने की हजार मिन्नतें कीं परन्तु सब व्यर्थ रहा। उन्होंने किसी का अनुरोध स्वीकार नहीं किया।

अब तक दो डाक्टर भी आ चुके थे। डा० सक्सेना और डाक्टर तन्खा। इसके अलावा निराला जी के निजी चिकित्सक डा० बृजकिशोरलाल भी उपस्थित थे।

उन लोगों ने कमलाशंकर से कहा कि निराला जी को शीघ्रातिशीघ्र अस्पताल ले चलिए, एक क्षण का विलम्ब भी घातक है। हर्निया के आपरेशन में जितनी ही देर होगी उतनी ही उलझन बढ़ेगी।

कमलाशंकर जी ने उन्हें निराला जी की अस्पताल न जाने की जिद बताई और कहा कि पण्डित जी के मन में इस समय यह धारणा बन गई है कि उन्हें यह कष्ट टट्टी न होने के कारण हो रहा है क्योंकि बार बार वे टट्टी लाने की दवा माँग रहे थे। अब आप लोग संतोष के लिये उन्हें कोई टट्टी लाने की दवा दे दें क्योंकि उनका टट्टी पेशाब पिछले अठारह घण्टों से बन्द है।

टट्टी हो जाने के लिए उन्हें दवा दे दी गई। डाक्टर यह कहकर चले गये कि जितनी जल्दी हो सके उन्हें अस्पताल ले जाइए।

थोड़ी देर बाद निराला जी ने बड़ी व्याकुलता से कमलाशंकर से कहा: तुमने टट्टी की दवा मुझे पहले वाली नहीं दी। इससे तो कुछ न होगा।

आप थोड़ा सब्र करें। कमलाशंकर जी ने इस ढंग से धैर्य दिया।

सभी परेशान थे कि आखिर निराला जी को अस्पताल ले जाने के लिये किस तरह राजी किया जाय। इसी बीच डा० मिश्रा के साथ श्री बालकृष्ण राव ने आकर पुनः कहा कि मैं साथ में एम्बुलेंस कार, स्ट्रेचर और स्ट्रेचरवाहक तथा डाक्टर भी लाया हूँ। यदि आप सहमत हों तो निराला जी को मार्फिया का इंजेक्शन देकर बेहोशी की हालत में अस्पताल उठा ले चलें।

नींद आने की दवा का बहाना बनाकर उन्हें इंजेक्शन दे दिया गया। आधे घण्टे के अन्दर सावधानी से सारी कार्यवाही कर लेने का आदेश देकर डाक्टर चला गया। निराला जी को नींद आने लगी। लोग उनके पूर्णतः सो जाने की प्रतीक्षा करने लगे ताकि उन्हें अनजान में अस्पताल ले जाया जा सके।

१२ अक्टूबर, ६१

१२ अक्टूबर को निराला जी ने नाई बुलवा कर अपने सिर का बाल घुटवा लिया मगर दाढ़ी रहने दी। वे अपना सारा काम स्वयं करने लगे।

वे भोजन पकाने में बहुत निपुण थे। बीमारी के दिनों में भी बहुधा रविवार के दिन स्वयं ही विधिपूर्वक भोजन बनाते और बड़े आनन्द तथा स्नेहपूर्वक अपने प्रिय जनों को खिलाते। स्वयं तो संयमित भोजन ही करते थे क्योंकि अस्वस्थ थे। डाक्टर ने उन्हें पूर्णतः आराम करने की ताकीद की थी मगर अपनी इच्छा के सामने वे किसी की न मानते थे।

१ अक्टूबर को १ बजे से ४ बजे शाम तक लगातार चार घण्टे तक वे गोश्त पकाने में लगे रहे। आँगन में चूल्हे के समीप कुर्सी पर बैठे हुए वे गोश्त पका रहे थे। कमलाशंकर जी ने उन्हें मना कर दिया पर वे न माने। चुपचाप अपने काम में लगे रहे। कुर्सी से उठ-उठ कर जब वे चूल्हे की लकड़ी ठीक करने लगते तब उनकी हर्निया पेट से नीचे की ओर बार बार लटक आता था।

मांस पक जाने के बाद कमलाशंकर के बहुत अनुरोध करने पर भी वे नहीं माने और जमकर खाया। यही उनका अन्तिम मांस भोजन था।

रात को दस बजे के करीब उन्हें बेचैनी महसूस होने लगी। कमलाशंकर जी तो पहले से सशंकित थे। उन्होंने निकट आकर पूछा—पंडित जी क्या बात है? आपको क्या तकलीफ है?

निराला जी ने उनका अनुरोध न मानकर मांस खा लिया था। अतएव अपनी पीड़ा को छिपाने का प्रयास कर संकोच से बोले—कुछ नहीं। मैंने बाजार से लेकर एक सेब खा लिया था उसमें [illegible] था उसी का प्रभाव मालूम पड़ता है लेकिन चिन्ता की बात नहीं। तुम जाओ सो जाओ।

कमलाशंकर जी ने डाक्टर को बुलाने की बात कही तो उन्होंने मना कर दिया और उन्हें सोने के लिए भेज दिया।

रात में लगभग १ बजे वे भयंकर रूप में रोने तथा कराहने लगे। वे असह्य यन्त्रणा में छटपटा रहे थे। उनकी हर्निया एकदम कड़ा हो गया था और अब आपरेशन ही एकमात्र उपचार था। कमलाशंकर जी ने अस्पताल चलने को कहा तो वे बिगड़ गये। अन्त में हताश होकर कमलाशंकर जी डाक्टर को बुलाने निकल पड़े।

बेचारे बाहर निकले भी न पाये थे कि मूसलाधार पानी बरसने लगा। वे किंकर्तव्यविमूढ़ से खड़े रहे। उनकी पत्नी ने आग जलाकर हर्निया को सेंका

निराला जी को कुछ आराम मिला और वे सो गये। डेढ़ घण्टे बाद पुनः वे जागे और दर्द से चिल्लाने लगे।

६।। बजे प्रातःकाल कमलापति जी ने सिविल सर्जन को फोन द्वारा इस गम्भीर स्थिति से सूचित किया पर वे यह कहकर कि यह सर्जरी केस है अपने सहायक डा० नथानी को भेज रहा हूं। वे हवाई अड्डे पर पं० नेहरू का स्वागत करने चले गये।

आश्चर्य एवं खेद का विषय है कि मरते हुए महाकवि के प्रति यह उदासीनता दिखा कर सिविल सर्जन महोदय पं० जवाहरलाल नेहरू के स्वागत में चले गये। क्या एक अकेले उनके न जाने से नेहरू के स्वागत में कमी हो जाती। मगर उसका भी क्या कसूर प्रजातन्त्र के नाम पर राजकीय पदाधिकारियों के लिए महान नेताओं को सलामी देना भी तो आवश्यक होता है। कितनी अजीब बात है।

एक ओर भारत का युग प्रवर्तक कवि मृत्यु के मुंह में था और दूसरी ओर प्रधान मंत्री के स्वागत में लोग हर्षोन्मत्त थे।

करीब तीन घण्टे के बाद डा० नथानी आये। निराला जी को मार्फिया का इन्जेक्शन दिया गया और उन्हें बेहोशी की दशा में अस्पताल ले जाने की राय हुई।

स्ट्रेचर चारपाई से लगाकर ज्यों ही उस पर निराला को लिटाने का प्रयत्न किया गया वे तत्काल उठ पड़े और चारपाई की पाटी पकड़ कर अड़ गये। सारा प्रयत्न विफल गया। फिर निराला जी बोले मुझे शांति से यहीं मरने दो मैं कहीं नहीं जाऊंगा। यह कहकर उन्होंने मसहरी हटा लिया। फिर वे सो गये। कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया गया। बाहर लोगों की भीड़ बढ़ रही थी।

शाम को चार बजे डा० नथानी पुनः देखने आये। डाक्टर ने उनके हृदय पर हाथ रखते हुए कहा आंतें मुलायम पड़ गई हैं। पण्डित जी का शरीर अच्छा मालूम पड़ रहा है। इस समय यह खतरे के बाहर हैं। सब में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। महाकवि मौत के मुंह से निकल आये थे।

इसके बाद मिश्र जी और शान्ति सम्मेलन के संयोजक मंत्री श्री रामप्रताप त्रिपाठी उनसे मिलने आये। निराला जी ने उनके प्रणाम का उत्तर देकर अपने पास बैठने का संकेत किया। मिश्र जी ने कुशल क्षेम पूछा तो बोले अब तो ठीक हूं आज बड़ा कष्ट था।

आपरेशन हो जाने पर वे खतरे से लोगों के लिए मुक्त हो जायेंगे इस बात का विश्वास सभी को था अतएव लोगों ने पुनः चर्चा चलाई तो निराला जी शांत स्वर में बोले—आपरेशन ! नहीं आपरेशन नहीं होगा और न मैं अस्पताल जाऊँगा। मैं इस शरीर से मुक्त तो होना चाहता हूँ लेकिन आपरेशन से नहीं। अब इस शरीर का मोह नहीं रहा। बूढ़ा हो गया हूँ।

अंतिम काल मे भी अतिथि सत्कार न भूले

मार्फिया के इंजेक्शन के कारण उनकी आँखें मन्द मन्द कर खुलतीं। उन्हें लेटने के लिए कहा गया किन्तु शिष्टाचारवश वे चारपाई पर बैठे रहे। कमलाशंकर जी ने निकट आकर कहा पण्डित जी आपने कल से कुछ भी नहीं खाया है। थोड़ा गर्म दूध ले आऊँ ?

तब उन्होंने बगल की आलमारी से तम्बाकू और चुनौटी निकाली और निर्मल जी को खैनी बनाने के लिए दिया। तम्बाकू खाकर उन्होंने अपने आपको चैतन्य अवस्था में लाने का प्रयत्न किया। फिर ब्रश और मंजन उठाकर मुँह साफ किया।

कमलाशंकर जी ने उन्हें एक प्याला गर्म दूध लाकर दिया। अपने हाथों में दूध लेकर उन्होंने निर्मल जी और त्रिपाठी जी के लिए चाय लाने का आदेश दिया।

अपने स्वभावानुसार वे अतिथि सत्कार करना इस समय भी न भूले। तत्क्षण ही उन लोगों के लिए चाय आ गई।

वे दूध पी चुके तो कमलाशंकर जी ने कहा पण्डित जी कल भोजन बनाने में आपने दो तीन घण्टे जो श्रम किया उस कारण आपका कष्ट बढ़ा। अब आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान हो जाना चाहिए।

निराला जी मुस्कराये और बोले पूरे चार घण्टे लगे थे कल। वही उनकी अन्तिम मुस्कराहट थी।

रात में उनके दर्शनार्थियों को कमरे से बाहर कर बाद किया गया। जब तक वे सो न गये उनके पर ध्यान जाते रहे।

१४ अक्टूबर, ६१

प्रातःकाल निराला जी को भयंकर खाँसी आई। उन्होंने खाँसते हुए कमलाशंकर जी की पत्नी को पुकारा। वे दुलार में उन्हें मुहल्ले की अन्य लड़कियों की भाँति 'बाबा' कहते थे। निराला जी का उन पर असीम स्नेह था। वास्तव में वे देवी स्वरूप महिला हैं जिन्होंने अपने जीवन का बहुतेरा समय महाकवि की सेवा सुश्रूषा में लगाया। निराला जी ने दर्द में कराहते हुए उनसे कहा — जो दर्द मुझे पहले हुआ था वही दर्द आज फिर शुरू हुआ। कल वाली दवा मुझे फिर पिला दो और कमलाशंकर से कह दो कि मेरे लिए [illegible]। एक प्याला अनार का रस भी इस समय मुझे पिला दो बाद नहीं पिऊँगा।

कमलाशंकर की पत्नी से ये उनकी अन्तिम बात थी। इसके बाद उनकी चेतना जाती रही। इसके बाद वे बहुत बुलाने पर भी बोले नहीं।

ऐसा अनुमान होता था कि उनके गुर्दों ने अपना काम करना बन्द कर दिया था यद्यपि चौबीस घण्टे से अधिक समय हो चुके थे उन्हें पेशाब नहीं हुआ था।

डॉक्टरों के अनुमान में उनके शरीर से तीन चार सेर पानी प्रतिदिन पसीने के रूप में निकलता था। इस क्रिया से गुर्दों पर इतना जोर पड़ता था कि वे टूट गये थे। इसके फलस्वरूप यूरिक विष रक्त में फैलने लगा था।

समाचार पत्रों में निकल चुका था 'निराला जी जीवन खतरे से बाहर' किन्तु [illegible] वे पुनः गम्भीर खतरे में पड़ गये थे। उनके स्नेहियों और शुभचिन्तकों को पुनः इस स्थिति की सूचना दी गई।

वे अत्यधिक बेचैनी के कारण शय्या में बार-बार उठकर पलथी मार कर हाथ टेक कर बैठते थे और फिर लेट जाते।

जब उन्हें प्याले में अनार का रस दिया जाने लगा तब उन्होंने उसे हाथ से हटाया जिससे आभास हुआ कि उनकी आँखों की ज्योति भी प्रायः लुप्त हो चुकी है। यूरिक विष व्यापन का यह पक्का प्रमाण था। उन्हें मरणान्तक पीड़ा हो रही थी। अपने पत्थर से कड़े [illegible] पर वे बार-बार हाथ फेरते परन्तु उनके मुख से एक कराह भी न निकलती थी। वे सहनशीलता की अन्तिम सीमा पर थे। उनके नेत्रों में

आंसू थे और न मुख पर हाय और चाय। विष को शरीर में समेटे हुए वे किस प्रकार मृत्यु से लड़ रहे थे।

उनकी क्षण प्रतिक्षण गिरती हुई दशा को देखकर कमलाशंकर जी ने उनसे कहा पण्डित जी यहां की वायु गन्दी हो गई है। यदि आप आज्ञा दें तो आपको स्वच्छ हवा में ले चला जाय—हम लोगों को कुछ और सेवा तथा उपचार का अवसर दें।

'हां अब ले जा सकते हो।' उन्होंने आज्ञा दी।

किन्तु डाक्टर ने निराला प्रकट की अब इन्हें अस्पताल ले जाना बेकार है। इनकी किडनी का फंक्शन रुक गया है। शरीर अनुकूल नहीं है।

अन्त में ग्लूकोज और सलाइन वाटर चढ़ाने का निश्चय हुआ। बढ़ती हुई बेचैनी के कारण वे क्षण-क्षण उठते-बैठते।

ग्लूकोज लगाने के लिए पास बैठे व्यक्तियों ने उन्हें पकड़ा दबाया। उस समय की बड़ी दयनीय स्थिति थी। वे कह रहे थे 'दण्डू मुझे उठाओ' 'लल्लू मुझे छुड़ाओ।' ये ही उनके अन्तिम शब्द थे।

ग्लूकोज लगाने के लिए उन्हें इन्जेक्शन देकर बेहोश किया गया। उनकी चेतना फिर सदा के लिए जाती रही। आक्सीजन भी दिया जाने लगा। उनकी नाक में आक्सीजन की नलिया लगी हुई थी और बांह पर ग्लूकोज बूंद बूंद रिस रहा था।

निराला के जीवन की अन्तिम रात्रि

निराला को मृत्यु से बचाने का कोई उपचार न था। उनकी स्थिति काबू के बाहर हो चुकी थी। लखनऊ मेडिकल कालेज के डाक्टर भी जवाब दे चुके थे। अब महाकवि का अन्त निकट था। उस घोर भयानक रात्रि में निराला की शय्या के समीप श्री सीतारमा श्री जयगोपाल श्री मुरलीधर और श्री कमलाशंकर जी गहरे शोक में डूबे उपस्थित थे। भाग्य की नाडि के गूना की सेज पर पड़े हुए थे। उनके अर्धजीवित शरीर को जिलाए रखने के लिए घण्टे घण्टे पर उन्हें कोरामीन का इन्जेक्शन लगाया जाता था। डाक्टर ने बताया था कि इस इन्जेक्शन द्वारा वे दो-चार दिन तक जीवित रखे जा सकते हैं।

लगभग ५ बजे रात्रि को उनकी साँस उखड़ने लगी और गले में घरघराहट शुरू हो गई। उन्हें ऑक्सीजन लगाना बन्द कर दिया गया और नाक में आक्सीजन की नली निकाल ली गई। कमलाशंकर जी ने कहा अब इस लिये काया की अधिक दुर्गति न की जाय और उनको शान्ति से स्वर्ग जाने दिया जाय। वह शान्ति के लिए ही अस्पताल लाये गए। उनको स्व काठरा की आजादी अधिक प्रिय थी। एक आजाद पक्षि की तरह उन्हें उड़ जाने दो।

१५ अक्टूबर, ६१

हिमालय धरती पर लेट गया !

एक सूर्य अस्त हो रहा था और दूसरा अस्त। कितना हृदयविदारक और कारुणिक दृश्य था। प्रातःकाल साढ़े ८ बजे महाकवि का शरीर ऐंठने लगा।

अपने शाला सून हय गया मे उन्होंने फूला हुइ अनन्त्या को एक बार पकड़ा। उनका अन्त एकदम निकट था।

साढ़े बजकर पचास मिनट पर उन्हे भूमि शय्या पर दी गई। भूमि शय्या पर आने पर उनकी साँसा की गति कुछ ठीक सी हो गई। किन्तु मुख मण्डल सुन्दर तथा शान्त हो गया। प्राय दो घण्टे तक शान्त भाव से पड़े रहे।

इसी मध्य श्री जयगोपाल राम की शक्ति पूजा का पाठ उनके समीप ही बैठकर करने लगे। गीता पाठ वेदमंत्र तथा शास्त्रानुसार गऊदान स्वर्णदान आदि क्रियायें की जाने लगीं।

नौ बजकर १५ मिनट पर उनके दोनों अधमुंदे नेत्र एकदम बन्द हुये और फिर एकदम स्थिर बन्द हो गये। श्री कमलाशंकर ने उनकी आँख के कोर में ढरकने हुए आँसू की अंतिम कण पोंछा।

कमलाशंकर जी की पत्नी ने निराला जी के मुख में तुलसी और गंगाजल डाला।

नौ बजकर तीस मिनट पर महाकवि सदा के लिए चिरनिद्रा की गोद में सो गये। उनका प्राणान्त हो गया।

महाकवि शांत मुद्रा में पड़े हुए थे। उनके सुपरिचित चेहरे को देखकर यह विश्वास नहीं होता था कि अब वे हमारे बीच नहीं रहे।

महाकवि के जन्म तथा मृत्यु की तिथि और दिन भी सार्थक थे। विद्या एवं कला की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की जन्मतिथि वसंत पंचमी था उसी दिन महाकवि का जन्म हुआ था और आज उनकी मृत्यु का दिन भी रवि (सूर्य) का दिन रविवार हो था।

थोड़ी ही देर में उनकी मृत्यु का समाचार सारे मुहल्ले, नगर और रेडियो आदि द्वारा अन्य नगरों में भी प्रसारित होने लगा।

क्षण भर में सारा मुहल्ला महाकवि के निवास स्थान पर उमड़ पड़ा। सारी भीड़ शोकाकुल और निःस्तब्ध थी। वातावरण अत्यधिक निस्तब्ध और निर्जीव था। निराला जी अब क्या सचमुच नहीं रहे? हरेक के हृदय में मौन क्षोभ और प्रश्न था।

नगर में सबत्र शोक छा गया। थोड़ी ही देर में नये पुराने अनेक साहित्यकारों, कलाकारों, प्रतिष्ठित नागरिकों और निराला के सभी शुभचिन्तकों की भीड़ जमा होने लगी।

काश सत्य झूठा होता!

१५ अक्टूबर १९६१ की दोपहर की बात है।

मैं अपने कमरे में पड़ा-पड़ा यह सोच रहा था कि आज सायंकाल महाकवि को देखने चलूंगा। अकेले नहीं, एक मित्र के साथ। पिछले दिन अखबार में निराला जी की भयंकर अस्वस्थता का समाचार पढ़ा था। ऐसी स्थिति में भी उनके दर्शन से वंचित रहूं, मेरे लिए शर्म की बात थी।

दारागंज, जहां महाकवि का निवास स्थान था, मेरे घर से कोई तीन मील की दूरी पर है और मेरे जैसे व्यक्ति के लिए साधन की कमी के कारण एक फर्लांग की पैदल यात्रा भी दुर्लभ होती है। अतएव एक रुपये की व्यवस्था करने की चिन्ता में था ताकि तांगे द्वारा ही रिक्शा द्वारा निकल जाऊं।

अपना तो जन ग्वाला था । सोच रहा था मैं भी भागूँ । निराला जी को देखने जाने की बात कहूँगा तो वे हँसेंगे ।

बस समस्या सुलझती लगी ।

बारह बजे थे सोचा चार बजे तक चला चलूँगा । इस ओर से निश्चिन्त होकर कुछ लिखने के विचार में बैठा ही था कि सड़क से गुजरते हुए ताँगे पर से लाउडस्पीकर की आवाज सुनाई दी ।

ये ताँगे तो और भी शोर मचाये रहते हैं । मैं खीझ कर बुदबुदाया, किसी नेता महाशय के भाषण की सूचना दी जा रही होगी या फिर किसी फिल्म का विज्ञापन हो रहा होगा ।

ताँगा घर से दूर था । साफ की आवाज आगे थी अतएव मैं स्पष्ट सुन नहीं सका था ।

दो-एक मिनट हुआ होगा कि माता जी दौड़कर कमरे में आईं और छूटते ही बोलीं 'शरद' सुना—लाउडस्पीकर क्या बोल रहा था ?

क्या ? मैंने आश्चर्य और हैरानी से पूछा ।

निराला जी की मृत्यु ... ।

ओह ...! मैं चौंक कर बोला हाँ मैं उनकी बात काटी ठीक से सुना भी है आपने ? और अगर सचमुच ऐसी बात है तो गजब हो गया ।

अभी अभी तो ताँगा इधर से गया है । माँ ने अपने कथन की पुष्टि की । मैं बौखलाया सा सड़क पर दौड़ पड़ा । माँ ने जो कहा भी उस पर मुझे विश्वास न होता था ।

ताँगा काफी दूर निकल चुका था मगर मैं उसके पीछे भागा जाता । निराला जी सचमुच नहीं रहे इस विश्वास करने को जी नहीं चाहता था ।

अचानक वे मेरे जेहन से हट गये । मैं ठगा-सा खड़ा रह गया । लाउडस्पीकर से जोर जोर भारी भरकम आवाज उस ताँगे के साथ ही आगे बढ़ कर कानों में प्रवेश कर हृदय तक प्रवेश करने लगा—दुःख का विषय है कि आज प्रातःकाल लगभग साढ़े नौ बजे हिन्दी के महान कवि निराला जी का स्वर्गवास हो गया उनके निवास स्थान

दारागंज वहाँ कोठी के समीप से उनकी अर्थी ३ बजे सायंकाल उठेगी आप सब अधिक से अधिक संख्या में महाकवि की शव यात्रा में सम्मिलित हों।

निराला जी चले गये। मैं फुसफुसाया उन्हें अन्तिम बार जीवित अवस्था में देख भी न सका। एक गर्म साँस मेरे होठों से फूटी—कुछ पुरानी बातें याद आई और कुर्ते पर दो बड़े आँसू ढुलक पड़े।

आश्वासन और अचेत सा कमरे की ओर लौटता हुआ मैं निरीह बालक सा बुदबुदा उठा काश मृत्यु झूठी होती।

निराला : शव यात्रा—दाह संस्कार

बड़ा भारी बन्द है यहाँ रुको। गौड़ जी ने कहा।

अन्तिम दर्शन तो कर लूँ। मैं जिद कर गया।

मेरा रिक्शा मंडी के थाने से दूर रुक गया। ताँगा और रिक्शों का कतार लगा था मुहल्ले के उन गरीबों का जो महाकवि की मृत्यु का समाचार सुनकर दौड़ आये थे।

मैं कलामन्दिर के सामने पहुँच गया—सामने चबूतरे पर भारी भीड़ थी। जान पहचान चेहरों पर दृष्टि गई—कुछ नये नये साहित्यकार! सबके सब गहरे शोक में डूबे हुए। मैं धीरे से एक कोने से सिमिट कर दरवाजे तक पहुँचा बड़ी मुश्किल से सिर अन्दर कर देखा महाकवि अर्थी पर लिटाये जा चुके थे।

मेरी कांपती दृष्टि क्षण भर को उनकी मुखाकृति पर पड़ी—भीषण सिहरन हुई और मैं नीचे उतर आया।

कैसा लग रहा है? बाहर आया तो शास्त्री ने पूछा यदि मन्दिर में न जाये गये तो हम लोगों को भी नमाव न लगा।

मान्दर नका गव यात्रा पन्न गा नागा। मैंन तारा जभी बालकृष्ण राव जा यत्ना परामर्श कर रहे थे कि अर्थी पैदल ले चली जाय या मोटर पर!

सबन एक स्वर में कहा कि पैदल ही ले जाई जायगी। ताकि अन्तिम बार उनका दर्शन तो कर सकेंगे।

गली के कोने और उदास दुखी दर्शकों की भीड़ लगी थी। उनमें अधिकांशतः ऐसे लोग ही थे जो साहित्यकार निराला नहीं वरन् महात्मा निराला की मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर दौड़े आये थे। उनके दीन हीन चेहरों पर व्याकुलता के लक्षण थे और उनकी आंखों में आंसू छलछला रहे थे।

सड़क पर अपने मित्रों सहित आकर एक ओर चुपचाप खड़ा हो गया। छोटी छोटी टुकड़ियों में खड़े हुए लोग शव-यात्रा के सम्बन्ध में विचार विमर्श कर रहे थे।

बहुत सारे नये पुराने साहित्यकारों को मैंने वहां पहले पहल देखा। महादेवी जी, भगवतीचरण वर्मा, इलाचन्द्र जोशी और अमृतराय आदि अपने आप में आश्वस्त, पीड़ित और किंकर्तव्यविमूढ़ थे।

साहित्यिकों के अलावा वहां पर नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों, प्रकाशकों, कलाकारों, हितैषियों और दारागंज के निवासियों का मेला उमड़ रहा था।

यह भी सुना कि कुछ समय पूर्व केन्द्रीय गृह मंत्री लाल बहादुर शास्त्री महाकवि को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने आये थे।

एक दिन पूर्व जीवित रोग ग्रस्त महाकवि को देखने के लिए जिनके पास अवकाश न था आज इस समय उन्हें श्रद्धांजलियां देने के अधिकार से वे हृदयहीन सहृदय जन वंचित न रहे।

मैं ऐसे भी कितने लोगों का नाम गिना सकता हूं जो प्रयाग में रहते हुए भी कभी महाकवि के द्वार पर नहीं आये लेकिन आज वे अधिकाधिक संख्या में वहां दिखाई पड़ रहे थे।

दिखाई भी क्यों न पड़ते ? निराला की शव-यात्रा में शामिल होकर उन्हें अपनी समानुभूति और सहृदयता का सार्टिफिकेट जो लेना था।

अर्थी बाहर निकल रही है।

वातावरण में सर्वत्र सुगंधित और रघुपति राघव राजा राम के स्वर गूंजने लगे। सबका का भार अर्थी के आगे पीछे चल पड़ा।

श्री इलाचन्द्र जोशी, अमृतराय, श्री बालकृष्ण राव और अन्य साहित्यिक बन्धुओं ने आगे बढ़कर अर्थी में कन्धा लगाया। अर्थी धीरे धीरे भारी भीड़ के बीच श्मशान की ओर चल पड़ी।

उनका मुख मण्डल खुला हुआ था। चौड़े ललाट पर लम्बा टीका सुशोभित था। गले में अनेक पुष्प मालायें थीं। सिर में पर तक उन्हें फूलों में लाद दिया गया था।

रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम । सबके कंठ स्वर एक रूप होकर वायुमण्डल में फैल रहे थे।

सड़क के दोनों ओर स्थित मकानों के चबूतरे छतों दुकानें और छज्जे भरे पड़े थे।

स्त्रियां बालिकायें बुढ़ाये और बच्चे सभी महाकवि के अंतिम दर्शन को उतावले हो रहे थे।

अर्थी आगे बढ़ती रही। आकाशवाणी के कार्यकर्ता रिकार्ड करते रहे। पुष्प और पुष्प मालायें बरसती रहीं।

शव संतप्त भीड़ धीरे धीरे श्मशान की ओर बढ़ रही थी। लोग कंधा देने के लिये दौड़ रहे थे मगर इतनी भीड़ में हरेक को यह सौभाग्य मिल पाना दुष्कर हो रहा था।

श्मशान घाट पर नौकायें तैयार थीं। कुछ साहित्यकार उन पर सवार हो गये और दाह-संस्कार के लिये चिता सजाई जाने लगी।

निराला जी के सुपुत्र श्री रामकृष्ण दाह-संस्कार के लिये शव के समीप शोकाकुल दिखाई पड़े।

आवश्यक धार्मिक क्रियायें समाप्त हुई और महाकवि को चिता पर लिटा दिया गया।

इस युग का यह महान हृदय विशारद देव्य दलन रहे।

चिता में लपटें उठने लगीं और महाप्राण का शरीर राख होने लगा।

क्या निराला जी सचमुच नहीं रहे? जन जन का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से प्रश्न कर रहा था।



गाधो जी से टक्कर

इन्दौर म हिन्दी साहित्य सम्मेलन था। सम्मेलन के सभापति महात्मा गाधी थे। उन्होने अपने भाषण म कहा—मैं यह सोचा करता हू कि हमारी राष्ट्र भाषा म रवीन्द्रनाथ जैसे कवि ने क्या नहीं जन्म लिया ।

यह सुनते ही निराला जी बिगड़ पड़े और गाधी जी से मिलने को तैयार हो गये। वे महादेव भाई के पास पहुच कर बोले—मैं राजनीतिज्ञ गाधी से नहीं बल्कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति से मिलना चाहता हू।

महादेव भाई ने उनके रोष का कारण पूछा तो वे बोले—मैं गाधी जी से पूछूगा कि आपने निराला साहित्य पढ़ा है अथवा नहीं ? वे कहेंगे नहीं तो कहूगा कि आप अभागे हैं। अगर पढ़ा भी तो आप समय नहीं।

पहले निराला साहित्य को समझने की कोशिश कीजिये फिर हिन्दी पर कुछ कहिये और अगर उन्होंने कहा कि समझा है तो मेरा कहना होगा कि मेरा गाधी से मतभेद है।

निराला जी की ऐसी बातें सुनकर महादेव भाई बहुत चकराये। उन्होंने निराला जी को गाधी जी से मिलाया किन्तु समय कम होने के कारण उनसे बातें नहीं हो सकी।

नेहरू और निराला

यदि हम पण्डित जवाहरलाल नेहरू को भारत का एकमात्र राजनैतिक कर्णधार और नेता कहते है तो महाकवि निराला को साहित्य का सर्वोत्तम तपस्वी और भारत का श्रेष्ठतम कवि कहना अतियुक्ति न होगी।

दोनो अपने अपने स्थान पर महान शक्तिया है और दोनो का अपने अपने क्षेत्र म बेजोड़ योगदान है।

कई बार ये दोनो महान शक्तिया आपस म साक्षात्कार के लिये आतुर हुयी। एक दूसरे से मिलने के लिये उत्सुक और प्रयत्नशील हुयी परन्तु कथित तर्क वितर्क न

कभी ऐसा शुभ अवसर निश्चिन्ततापूर्वक आने नहीं दिया। भय इस बात का था कि कहीं ये दोनों महान शक्तियाँ एक दूसरे से टकरा न जायँ और फिर उनमें से किसी एक को पराजित न होना पड़े। अतएव नेहरू और निराला मिलन के अवसर सदैव टाल दिये गये।

एक ओर महाकवि के स्वाभिमान ने कभी उन्हें भारत के प्रधान मंत्री के प्रति उदार नहीं होने दिया तो दूसरी ओर भारत के प्रधान मंत्री ने महाकवि के लिये अपने को तरल और द्रवीभूत नहीं बनाया।

किन्तु एक बार महाकवि का प्रेम सजग हो पड़ा और वे नेहरू मिलन का लोभ संवरण न कर सके। हाथ में मिठाई का दोना और चाय का प्याला लिये हुए वे उस विशाल भवन के प्रमुख द्वार पर पहुँचे जिसमें प्रधान मंत्री ने आतिथ्य ग्रहण किया था।

खेद का विषय है कि महाकवि की इच्छा अपूर्ण रह गई। द्वार रक्षकों ने उन्हें नेहरू से मिलने नहीं दिया जिसके फलस्वरूप मिठाई और चाय वहीं फेंककर वे खिन्न मन से वापस लौट गये।

इस घटना की सूचना जब प्रधान मंत्री को मिली तो उन्होंने निम्न शब्दों में अपने विचार प्रकट किये पिछली बार इलाहाबाद में मैंने कहीं से सुना कि निराला जी मिठाई और चाय लेकर मुझ से मिलने आये किन्तु सिपाहियों से डर उनकी ठन गई और चाय का प्याला तथा मिठाई का दोना वहीं फेंक कर वे लौट गये।

वे राष्ट्रपति, तो मैं साहित्यपति हूँ

एक बार की बात है कि इलाहाबाद में भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद पधारे। वे निराला जी से मिलने को उत्सुक थे अतः उन्होंने अपने पी० ए० द्वारा निराला जी को बुलवाया।

पी० ए० ने इस कार्य में महादेवी जी की सहायता ली। वे महादेवी जी के साथ महाकवि के निवास स्थान पर आये।

महादेवी जी ने निराला जी को राष्ट्रपति के आगमन का समाचार दिया तो वे बोले—कहा है ?

गवर्नमेण्ट हाउस में ठहरे हैं और आपसे भेंट करना चाहते हैं। देवी ने बताया।

निराला जी कुछ सोचने लगे तो वे पुनः बोलीं मोटर आई हुई है आप साथ ही चलें तो अच्छा होगा।

मैं वहा क्या करने जाऊ। निराला जी एकाएक उत्तेजित होकर कहने लगे वे राष्ट्रपति हैं तो मैं साहित्यपति हूँ। अगर वे डा० राजेन्द्र प्रसाद हैं तो वे यहाँ भी आ सकते हैं और अगर वे राष्ट्रपति की हैसियत से मुझे वहाँ बुला रहे हैं तो मुझे राष्ट्रपति से कुछ नहीं लेना देना है।

उनका उत्तर सुनकर सब मौन रह गये।

मुहतोड उत्तर

एक बार महाकवि के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में यह सूचना प्रसारित की गई कि उनकी दशा चिन्ताजनक है वे एक प्रकार से विक्षिप्त से हो उठे हैं अतएव सरकार उनके उपचार के लिये उचित व्यवस्था करने की कृपा करे।

इस सूचना पर उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री डाक्टर सम्पूर्णानन्द ने कहा कि निराला जी को पागलखाने में भेजकर उनका उपचार करना चाहिये।

महाकवि को मुख्यमन्त्री के उक्त विचार ने गहरी चोट पहुंचाई। वे इस सहन न कर सके और उन्होंने एकदम मुंहतोड उत्तर दिया आगरे के ताजमहल की अपेक्षा मैं गंगा जी में विश्राम करना अधिक अच्छा समझता हूँ। सरकार मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता न करे अपने स्वास्थ्य की सुधार। (साप्ताहिक भारत २५ जनवरी १९५५)

मेरठ कवि सम्मेलन

एक बार तुलसी जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित कवि सम्मेलन में मेरठ वालों ने निराला जी को आमन्त्रित किया। निमन्त्रण-पत्र के उत्तर में निराला जी ने लिखा,

मुझे प्रचुर धन प्रदान किया जाय, जब मैं सभास्थल में आऊँ तो सब खड़े होकर स्वागत करें और जब मैं कविता पढ़ूँ तो सभापति भी खड़े रहें। सब शर्तें तो मान्य भी हो सकती थीं किन्तु सभापति के खड़े रहने की शर्त कठिन थी क्योंकि मेरठ के एक प्रतिष्ठित तथा सम्भ्रान्त नागरिक कवि सम्मेलन के सभापति मनोनीत किये जा चुके थे। उसका यह समाधान किया गया कि स्वयं निराला जी को कवि सम्मेलन का सभापति बना लिया जाय।

कवि सम्मेलन आरम्भ हुआ, निराला जी सभापति बनाये गये और वे अध्यक्ष पद से भाषण देने लगे। श्रोताओं की ओर से आवाज़ आयी, कविता पढ़िये।

निराला जी बराबर बोलते रहे।

फिर वही आवाज़ एक साथ आयी, कविता सुनाइये। निराला जी को इस हुल्लड़ पर क्रोध आ गया। वे मंच पर से उठकर चल पड़े। वे इतने क्रोध में थे कि उन्हें जूता पहिनने की भी याद न रही। जूता हाथ में ले लेकर चल पड़े। कालेज के दरवाज़े पर पहुँचे तो उन्हें कुछ लोगों ने रोका। वे पसीने से तर-बतर थे। एक छात्र [illegible] उन्हें पंखा झलने लगा। किसी ने हाथ में जूते लेकर पाँव में पहनाये। महाकवि कुछ नम्र हुए और पूछा, क्या चाहते हो? हम लोग आपकी कविता सुनना चाहते हैं, सब ने एक स्वर में कहा। निराला जी एकाएक प्रसन्न हो उठे और बोले, अच्छा, कविता तो सुनाऊँगा लेकिन उस मंच पर नहीं। तुरन्त ही दूसरा मंच तैयार किया गया और निराला जी उस पर विराजमान होकर सस्वर पाठ करने लगे।

ऐसे विचित्र थे हमारे महाकवि।

निराला का वस्त्रोदान

एक बार बसन्त पंचमी के दिन निराला जी गंगा स्नान को गये। स्नान करने के पश्चात् वे लौटे। तट पर आये एक नग्न [illegible] [illegible] भिखारी ने उनसे वस्त्र की भिक्षा माँगी। उसे स्वप्न में भान हो कि दानवीर महाकवि उसके सामने हैं।

निराला ने अपना नया कुर्ता उसके हवाले कर दिया और धोती पहनने लगे। स्टेशन में एक बुढ़िया ने आगे बढ़कर धोती माँग ली। महाकवि ने अपनी परवाह न करके सहर्ष धोती भी दान कर दी। वहाँ पर उपस्थित लोग आश्चर्य और श्रद्धा भरे नेत्रों से महाकवि को निहार उठे।

अब उनके पास केवल कम्बल बचा था और उन्होंने उसे भी उठाकर एक तीसरे भिखारी को दान करने के लिए आगे बढ़ाया कि एक व्यक्ति ने उनका हाथ पकड़ कर रोक लिया और बाकी भिखारियों को वहाँ से भगाया। उन्होंने निराला जी को अपने साथ रखकर पहुँचाया। जनसमूह श्रद्धा और गदगद कण्ठ से महाकवि की दानवीरता की सराहना करता।

मेरी माँ भीख नहीं माँगेगी !

एक दिन निराला जी के पास एक भी पैसा नहीं था किन्तु उन्हें पैसे की बड़ी जरूरत थी। दोपहर के भोजन के बाद नंगे सिर नंगे पैर बदन पर केवल एक कुर्ता डाले हुए वे चौक की ओर चल पड़े।

अपने प्रकाशक (लिताब महल) के यहाँ पहुँच कर उन्होंने पारिश्रमिक की माँग की। प्रकाशक महोदय ने उन्हें तीन सौ रुपये दिये। वह हुए दस-दस के नोट थे—भजान को पास चक्कर को था अन लगा को फेंट में लपेट कर पैदल ही अपने निवास स्थान की ओर चल पड़े।

जब वे अनापी बाग के निकट पहुँचे तो एक बुढ़िया लठिया टेकते हुए सामने पड़ गई।

निराला जी को देखते ही कह पड़ी, बेटा एक पैसा दे दे बड़ा भूख लगा है।

निराला जी गम्भीर होकर कुछ क्षणों तक उसे देखते रहे। उस बुढ़िया को बेटा कहना उन्हें चोट कर गया। उन्होंने उस बुढ़िया से पूछा तुम्हें एक रुपया दे दूँ तो कितने दिन भीख नहीं माँगोगी ?

दो-चार दिन नहीं माँगूँगी बेटा। बुढ़िया ने उत्तर दिया।

तुम्हारा एक महीने का खर्च कितना होगा ? निराला जी ने फिर पूछा।

कोई पन्द्रह-बीस रुपया। बुढ़िया ने बताया।

और साल भर को। निराला जी ने फिर पूछा।

बुढ़िया ने समझा मजाक कर रहे हैं और झुँझलाकर बोली—पहले एक दिन का तो ठीक हो फिर साल भर की फिक्र करूँ।

अच्छा ये बताओ कि तुम्हें कितने रुपये मिल जायँ तो तुम भीख माँगना छोड़ दोगी? निराला जी बोले।

दो सौ रुपये मिल जायँ तो भीख माँगना छोड़कर कोई रोजगार कर लूँगी। वह बोली, भीख माँगना अच्छा नहीं लगता और कोई भीख देता भी नहीं।

उसकी बात सुनकर निराला जी ने सारे रुपये निकाल कर उसे देते हुए कहा—ये तो तीन सौ रुपये हैं। इससे कोई काम करके पेट चलाओ। अब भीख मत माँगना। निराला की माँ और भीख माँगेगी? नहीं, अब मेरी माँ भीख नहीं माँगेगी। कहकर वे आगे बढ़ गये।

हाथ में नोटों की गड्डी दबाये बुढ़िया आश्चर्यचकित सी उन्हें जाते देखती रही।

निराला जी खाली हाथ घर लौटे तो किसी ने पूछा कहाँ गये थे पण्डित जी।

किताब बेचकर रुपया लेने गये थे। निराला जी बोले—हाँ, तीन सौ रुपये लिये थे मगर रास्ते में मेरी एक माँ मिल गई, भीख माँग रही थी, उसी को दे दिया, उसे जरूरत थी।

इक्केवान का सौभाग्य

एक बार निराला जी प्रकाशक के यहाँ से पारिश्रमिक लेकर एक इक्के पर बैठकर दारागंज आये। उनकी जेब में फुटकर पैसा नहीं था इसलिए एक दस रुपये का नोट इक्केवान को देकर चलने लगे।

इक्केवान ने समझा कि फुटकर पैसा नहीं है नोट भुनाने के लिये दे रहे हैं। वह नोट भुनाने गया और जब वापस लौटा तो निराला जी नदारद थे।

वह आगे बढ़ा तो निराला जी जाते हुए दिखाई पड़े। उसने आगे बढ़कर आवाज लगाई—महाराज पैसे तो लेते जाइये।

जब वह समीप पहुँचा तो निराला जी बोले — क्या बात है, क्या कम है? अब मैं नहीं दूँगा, आज मुझे पैसे की जरूरत है।

नहीं महाराज, अपने रुपये न लीजिये। आश्चर्यचकित वह पुनः बोला।

ले जाओ, ले जाओ। निराला जी ने कहा।

नहीं महाराज, सब कुछ ले लूँ—मेरी आदत बिगड़ जायगी। वह बोला।

नहीं, आदत नहीं बिगड़ेगी भाई, ले जाओ। थोड़ा थोड़ा तो कर ले रहे हो।

वह आँखों में श्रद्धा और आश्चर्य समेटे इस देवता पुरुष को और देखता रहा। अपने सौभाग्य पर भगवान को धन्यवाद देकर उसने महाकवि के चरण स्पर्श किये।

निराला, पागल अथवा मानव सेवी!

मई की एक चिलचिलाती हुई दोपहरी थी। दुनियादारी के रिश्तों को बनाये रखने के लिये मैं भी अपने नातों के साथ एक शव यात्रा में सम्मिलित था। भीषण गर्मी में लू के थपेड़े सहता हुआ डामर की तपती चिपचिपाती सड़क पर से गुजरता हुआ मैं दारागंज की ओर बढ़ रहा था।

रामबाग स्टेशन के पहले पुल के समीप पहुँचकर मैं अपने कुछ साथियों सहित रुक कर आश्चर्यजनक तमाशा देखने लगा।

हमने देखा कि दो-तीन हृष्ट-पुष्ट भिखमंगे पुल के नीचे बैठे हुए हैं और एक लम्बा-तगड़ा विशालकाय साधु एक बाल्टी में पानी भरे हुए उनके पास जमीन पर छिड़काव करके उसे शीतल बनाने का प्रयत्न कर रहा है। पानी छिड़कने के बाद वह उन्हीं के बीच बैठकर बड़े प्रेम से बातें करने लगा।

हम उस क्षण आश्चर्यचकित रह गये जब हमें ज्ञात हुआ कि वह साधु और कोई नहीं, महाकवि निराला थे।

आज भी मस्तिष्क में एक तर्क उठता है निराला मानव सेवी थे अथवा पागल!

निराला बजट

निराला जी रुपये हाथ में आते ही उन्हें खर्च कर डालते थे जिससे प्रायः उन्हें आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ता था।

उनका व्यय सन्तुलित और व्यवस्थित करने के विचार से श्रीमती महादेवी वर्मा ने उनका घरेलू बजट बनाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। इस बजट में नाई से लेकर खाने पहनने आदि सभी तरह के खर्चे की सूची तैयार की गई।

परन्तु यह बजट एक सप्ताह भी स्थिर न रह सका।

रुपया आया और बजट की चिन्ता छोड़कर निराला जी ने पचास रुपये किसी विद्यार्थी की सहायता स्वरूप दे दिये और दस रुपये किसी बीमार साहित्यकार की मदद के लिये भेज दिये। इस प्रकार सारी एकत्रित पूंजी एक ही सप्ताह में समाप्त हो गई।

सच्ची श्रद्धांजलि

निराला जी की सहृदयता के अनेक संस्मरण कहे सुने जाते हैं और यह संस्मरण भी अत्यन्त हृदयस्पर्शी है।

प्रयाग में पण्डित जवाहरलाल नेहरू के बहनोई श्री आर० एस० पण्डित का जब निधन हुआ उस दिन शाम को आठ बजे निराला जी को पता चला कि श्री आर० एस० पण्डित का शव त्रिवेणी श्मशान घाट पहुंचाया गया है। वह तुरन्त उस ओर चल पड़े।

लोगों ने उन्हें यह कहकर रोकना भी चाहा कि शव का दाह संस्कार हो चुका होगा और शव-यात्री लौट चुके होंगे।

परन्तु वे कब मानने वाले थे बोले मुझे गंगा में स्नान करना है बिना [illegible] आयें।

सुनसान रात में निराला जी स्व० आर० एस० पण्डित की अधजली चिता पर पहुंच गये तब देखा कि शव यात्री कबके लौट चुके थे।

निराला ने उस दिन उपवास रक्खा और एक कविता भी लिखी।

वह तो कवि हो गया

एक बार निराना और पन्त जा आदि अपने किमी मित्र के यन चाय पर निमन्त्रित किय गये।

उनम मान्त्यि चचा चन रहा थी वि न्नन म एक नौकर चाय नाश्ना आदि नकर वन्न आया।

पत जा न बडी महानुभूनि के माथ न्मम पूछा तुम्हारा क्या नाम है भाई ?

मकू मरकार। उमन उत्तर दिया।

क्या तुम अकेन हो मकू ? उन्होन फिर पूछा।

नहा मरकार एक मा एक बिटिया और दो भाइ भा हैं। उमने बताया।

कमान वाले तुम अकेल ही हो ? पत जी न नया प्रश्न किया।

बडा भाई खती म हाथ बनाना है छाना भाइ न हान क बराबर है।

लागा न समझा वि उसका छाना भाइ आवारा और नरारतो निकन गया है तभी मकू उमन लिय एमा कह रहा है। पन्त जा न जिनामा प्रगन का क्या उमक माय क्या बान है ?

मकू न महज भाव स उत्तर दिया अर मरकार वह ता कवि हा गया।

यह सुनते हा सब क सब ठहाका मार कर हम पड और निराना जी उचक कर उसका पाठ ठाकत हुय बान नाबान बना।

निराला ने दुल्हन को देखा या दुल्हन ने निराला को ?

महाकवि जब कभी किमा गना या रास्त म गुजरत नगत मकडा नागा का आखें उन पर जम जाना। नाग आना म श्रद्धा और आश्चय समटे नव तक उन्ह दखने रहत जब तक वि वे आखा म आझन न हा जान।

एक न्नि रान म नगभग मान बज निराना जा नारायज का एक मन्क पर म गुजर रहे थ वि ममीप न किमा पर अपना नव विवान्नि पत्नी क माथ बन हुय युवक न पत्नी का महाकवि का न्मन कराना चाहा।

इसके पहले कि वह निराला जी के स्थान पर पहुँचता वे आगे निकल चुके थे अतएव वह बेचारा गहना में अटका हुआ सुन्दर रिक्शे के पीछे स्थान के लिए चला । रिक्शे वाले ने रिक्शा आगे बढ़ा दिया था । उस बेचारे का चेहरा का हार रिक्शे के पहिये में फँस गया और वह जमीन पर गिर पड़ा ।

लोग यह तमाशा देख रहे थे मगर तब तक महाकवि फुर्ती में वहाँ और पहुँच और भाव धार कर नव विवाहित लड़की को उठाते हुए बोले— बेटा चोट तो नहीं आई ?

वह शर्म से भीग गई । निराला जी ने बहू को तो देखा परन्तु बहू की उत्सुक प्यासी नजरें निराला को इस सेवा अथवा नहीं कहा नहीं जा सकता ।

निराली परीक्षा

निराला जी का जीवन प्राय सदा आर्थिक अभावों में व्यतीत हुआ है । बहुधा ऐसा समय आया है जबकि उनके पास धन धरा रहा की रहा है । यही कारण रहा है कि वे दरिद्रों और याचकों के प्रति बड़े ही विनम्र और दानी रहे हैं ।

एक बार ओरछा राजा प्रसाद अवस्थी पण्डित जी से मिलने आये । उन दिनों वे कुछ बीमार थे । अवस्थी जी ने उनकी दानवीरता की सब कहानियाँ सुन रक्खी थी । अतएव उन्हें महाकवि की परीक्षा लेने की सूझी । वे पण्डित जी के कुछ रुपये माँग बैठे । महाकवि ने तुरन्त अपना बास्केट के निकाल साथ लाकर जितने पैसे थे उन्हें दिए और उस अवस्था जी की ओर बढ़ाते हुए बोले इस समय तो कुल साढ़े तीन रुपये हैं यदि इतने से काम चल जाय तो ले जाइये ।

अवस्थी जी असमंजस में पड़ गये । मन में सोचने लगे—कहाँ तो महाकवि की परीक्षा लेने की सोची । फिर पण्डित जी ने निराश मिलकर कहा नहीं पण्डित जी मुझे पैसों की जरूरत नहीं है ।

फिर साथ क्या निराला जी ने कहा तुमको है यह बहुत कम है । तुम्हें पैसों की जरूरत है । अच्छा और मैं लाता हूँ । यह कहकर वे घर में किसी को आवाज देने लगे ।

अब ता अवस्था जा बहन ना घबराय और अपना जेब म मनीआग निकाल कर निराला जा का निवराते हुय जान नलिय पन्नित जा मरे पास रुपय हैं। उस न्व कर निराला जा इतना हा बात समझ गया ।

निराला जी की दवा

एक बार मनाकवि क परा म अपरम ना गया था। व खीझनवार कर उस गुजराते और कहत अब निमी न्नि न्म नाग न्गा। बिना दाग यह बीमारा दूर न नागी।

पन्नित शिवगायान मिश्र न यह न्ना न्या ता नान पन्नित जी न्वा नाऊ।

इसका क्या न्वा है यह ता नागन म ही ठीक नागा। निराला जी न उत्तर दिया।

अगर काइ न्वा ना ता न आऊ ? मिश्र न फिर कना।

नाम का दवा आ गइ। पान का न्वा और मलहम। मन्नम नकर निराला जा न पाव म लगाया और पीन का न्वा क लिय कना एक आम की खराक है। यह पीवा मान न्नि नगगा। नानी का मुन मात कर वह आधी नीना पा गय।

ठाक ना था उस भूखरानार नरार क लिय एक आम न्वा का क्या महत्त्व था।

दूसरे न्नि उ हान नेष दवा भा पा डाला।

पहले कमला फिर निराला श्रद्धा के पात्र हैं।

महाकवि निगना म पूव दारागज प्रयाग क निवासी या धमनारायन जा एव उनके समस्त परिवारजन श्रद्धा तथा वन्दना क पात्र हैं जिहू एक लम्बी अवधि तक महाकवि क सम्पर्क म रहन आर उनका सवा सुश्रूषा करन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

न्न्नी साहित्य समाज चिरकाल तक उनका ऋणी बना रहेगा।

निराला जा क अन्तिम न्निा म उन्होंन जिस निष्ठा एव भक्तिभावना म हिन्ना

के वरद पुत्र का अथक परिश्रम से सेवायें की हैं वह कभी भुलाई न जा सकेंगी और उसकी तुलना निराला जी के किसी भी प्रमुख शिष्य और भक्त से न की जा सकेगी।

कमलाशंकर जी ने महाकवि की निःस्वार्थ सेवायें की हैं। उन्हें उनसे क्या स्वार्थ और लाभ हो ही सकता था?

वे धन्य हैं उनके परिवार जन पूज्य हैं कि उन्होंने निराला जी जैसे निराले एवं अटपटे तथा तीक्ष्ण महापुरुष की सेवायें करते हुए ग्यारह-बारह वर्षों की लम्बी अवधि बड़े ही संयम और निष्ठा के साथ व्यतीत कर डाली। जिसे भी निराला के सम्पर्क में कुछ समय व्यतीत करने का शुभ अवसर मिला होगा वह भलीभाँति जानता होगा कि वे कितने असाध्य और अव्यावहारिक थे। ऐसे महापुरुष के सम्पर्क में दृढ़ और संयमित रह पाना कितना दुष्कर होता है!

निरन्तर अस्वस्थ, चिन्तित और व्यथित रहने के कारण निराला जी का स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी हो गया था। कभी क्रोध में उनके मुख से गालियाँ भी निकल जाती थीं किन्तु श्री कमलाशंकर एवं उनके परिवार जनों ने महाकवि की सेवा सुश्रूषा में नहीं नहीं ध्यान दिया और सदैव श्रद्धा के साथ सेवायें करते रहे।

ऐसे महान व्यक्तित्व और सहृदयता के पात्र थे कमलाशंकर जी और उनका निराला सेवी परिवार वन्दनीय है। महाकवि के साथ उसी प्रकार उनके नाम को यश मिलना चाहिये जिस प्रकार भगवान रामचन्द्र के भक्त सेवक हनुमान जी को मिला है।

जब हम निराला जी से मिले

मृत्यु के पूर्व मैंने केवल दो बार महाकवि के दर्शन किये थे। एक बार तो उस समय जबकि मेरी उम्र केवल बारह वर्ष की थी और मैं आठवीं कक्षा का विद्यार्थी था।

कालेज में कवि-सम्मेलन आयोजित किया गया था और उसकी अध्यक्षता करने के लिये महाकवि को बुलाया गया था।

कविता लिखने का शौक मुझे इसी उम्र में सवार था। छोटी मोटी बचकानी कवितायें लिखा करता था।

लोगों को अपनी कविता सुनाने के लिए इतना उत्सुक रहता था कि कवि सम्मेलन के संयोजक जी से कहकर अपना भी नाम लिखा लिया था।

निराला जी बहुत बड़े कवि हैं बस इतना ही उस समय जानता था। मुझे उन्हें देखने की बड़ी उत्सुकता थी।

कॉलेज का हाल ठसाठस भरा था। अन्य निमंत्रित कविगण आ चुके थे केवल निराला जी की प्रतीक्षा थी।

लगभग साढ़े सात बजे महाकवि पधारे।

निराला जी आ गये निराला जी आ गये। लोगों के हर्षोल्लास और तालियों की गड़गड़ाहट से हाल गूंज उठा।

मैं मंच पर पीछे की ओर बैठा हुआ था उचक कर देखा। ये ही हैं निराला जी? मेरे विस्मय विमुग्ध नेत्र उस विशालकाय महामानव को कई क्षणों तक घूर घूर कर देखते रहे।

लोगों ने बड़ी श्रद्धा से आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और मंच पर बिठाना चाहा तो वे मंच की सीढ़ियों पर ही बैठ गये। बहुत कहा गया मगर वहीं वह बैठे रहे। फिर उन्होंने बीड़ी माचिस लाने को कहा।

सारा हाल उन्हीं की ओर देख रहा था।

बीड़ी माचिस आ गई। उन्होंने सीढ़ी पर ही बैठकर बीड़ी पीना शुरू कर दिया। फिर उनकी आज्ञा से कवि-सम्मेलन आरम्भ हुआ।

मैं छोटा अवश्य था किन्तु निम्न और मामूली बन्दा था अतएव मेरा नाम पुकारा गया तो मैं भी बेधड़क मंच पर आकर अपनी कविता पढ़ने लगा।

वह बचकानी कविता आज तक याद है मुझे —

मुझसे न गुज़ारा किया जिन्दगी भर।
किया मुश्किल और उनकी रुलाना
सिसकना प्रलय में व्यथा का कहाना
थपेड़ों से लड़ता रहा जिन्दगी भर।

महाकवि की दृष्टि मुझ पर पड़ी। वे एकाएक मंच पर से उठकर आये। मेरी पीठ थपथपाई, मुझे आशीर्वाद दिया। उस क्षण मुझे कितनी असीम प्रसन्नता हुई, उसकी अनुभूति आज भी साहित्य सृजन में उदासीन होने पर मुझे सबल प्रेरणा देती है।

अन्त में निराला जी ने भी अपनी कई सुन्दर कवितायें सुनायीं। उनकी उच्चकोटि की रचनाओं में छिपे हुए गूढ़ रहस्य को तो मैं नहीं समझ सका था किन्तु इतना अनुमान अवश्य कर लिया था कि वास्तव में वे महाकवि हैं।

रात दस से अधिक का समय हो चला था। दिसम्बर या जनवरी का महीना था। भीषण सर्दी पड़ रही थी। मगर महाकवि को इस रात की कोई परवाह न थी। उन्होंने केवल लंगोटा पहन रखा था और उनके शरीर पर कोई वस्त्र न था। बस गले तक उन्होंने एक कम्बल लपेट रखा था।

बहुत कहने और आग्रह करने पर भी वे कार में जाने को तैयार न हुए और न मार्ग-व्यय ही लिया बल्कि पैदल ही अपने निवास स्थान की ओर चल पड़े।

मैं आश्चर्यचकित दृष्टि से एकटक नेत्रों में श्रद्धा समेटे उस महामानव की ओर देखता रहा।

मेरे लिये यह उनके प्रथम दर्शन का अवसर था। उसके बाद फिर कई वर्ष पश्चात मुझे कुछ देर के लिये ऐसा मौका मिला था।

सच तो यह है कि प्रयाग में निराला जी के निकट रहते हुए भी स्वयं उनके दर्शन से सदैव वंचित रहा मगर इसका एक विशेष कारण था, कोई असम्मान भावना नहीं।

जब कभी निराला जी के बारे में चर्चा चलती, मेरे प्रौढ़ साथी मित्र कहते वहाँ न जाना, भला पिट जाओगे। निराला जी पागल हो गये हैं। वे किसी को पहचानते नहीं, गालियाँ देते हैं। उनके सिर पर [illegible] किसी से मिलते नहीं। ऐसी आदि आदि इधर-उधर की बातें।

मेरा बाल मस्तिष्क ऐसी बातें सुनकर चक्कर खा जाता और मेरी छोटी बुद्धि कहती कि वास्तव में तुम्हारा उनके पास जाना ठीक न होगा।

इन्हीं बातों के आधार पर मैंने यह धारणा बना ली थी कि आम जनता से निराला जी का मिलना नहीं दिया जाता। इससे भी बड़ी बात यह थी कि वे [illegible]। मैं उनके दर्शन

करने गया और वे बिगड़ गये अथवा कहने लगे कि कविता सुनाओ तो मैं क्या करूँगा ? उनकी आकृति के सामने तो मारे भय के मेरी आवाज ही न फूटेगी।

इस तरह सोच-संकोच और तर्क वितर्क में कई वर्ष बीत गये। मैं निराला जी के दर्शन की आशा को अपने हृदय में ही दबाये साहित्य सेवा की ओर गतिशील रहा।

१९६० के जुलाई महीने में आशा के विपरीत अचानक ही मुझे महाकवि के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उन दिनों मैंने अपना एक उपन्यास लिखकर समाप्त किया था। पारिश्रमिक की रकम मिल गई थी इसलिये जिम्मेदारी की ओर से निश्चिन्त होकर ज्यादा समय गप शप में गुजरता था।

एक दिन सायंकाल मेरे परम मित्र और वयोवृद्ध साहित्यकार पंडित पुरुषोत्तम दास गौड़ बोले "चलो एक दिन निराला जी को देख आयें।

सुना है कि आजकल उनकी तबियत कुछ ठीक नहीं रहती। हमारे लिये शर्म की बात है कि इलाहाबाद में रहकर भी निराला जी की खबर न रखें।"

"क्या आपका परिचय निराला जी से है ?" मैंने तुरन्त ही पूछा "वे आपको जानते हैं ?"

"खूब अच्छी तरह।" गौड़ जी इतना कहकर मेरे अजीब सवाल पर आश्चर्य से हँस दिये, फिर बोले "इसमें परिचय से क्या मतलब ? परिचय हो तभी महान लोगों से मिलना चाहिये ?"

"मैं तो यही समझता हूँ।" मैंने उन्हें अपने मन की सारी बात कह सुनाई।

उन्होंने मेरे तर्क, भ्रम और संकोच का खण्डन किया। तत्पश्चात दूसरे दिन प्रातःकाल हमारा प्रोग्राम महाकवि के यहाँ जाने के लिये निश्चित हो गया।

सबेरे हम रिक्शे पर बैठकर महाकवि के निवास स्थान दारागंज की ओर चल पड़े।

जिस समय हम लोग पहुँचे निराला जी अपने कक्ष में एकान्त में अकेले थे। गम्भीर चिन्तन में लीन से विश्राम कर रहे थे।

हमन अभिवादन किया और चरण स्पर्श करन क लिय झुक तो व बड स्नह स बाल आजकल क्या लिख रह हा कामत जी ? तुम्हारा तो मुख बन्द भायी।

इधर नया कुछ नहा लिखा पण्डित जी ! मरे मित्र न मशप म इतना कहकर मरा परिचय दिया।

अच्छा अच्छा ! वे गम्भारतापूवक मुस्कराय और कहन लग नया पाढी काफी तजी स आग बढ रही है। फिर मरा पाठ थपथपात हुय बाल काई कविता सुनाओ।

म सहम कर रह गया। सजन क क्षत्र म मुझ पाच वष हा रह थ परन्तु मरा झिझक इतनी न खुला था कि मैं निराला जस उच्चकोटि क रहस्यवादी महाकवि क सामन धधडक निस्संकोच भाव स अपना कविता सुना सकू।

उन्हान मरा सकाच भाप लिया और मृदुल भाव स बाल—सुनाओ सुनाओ। और फिर स्वय ही गुनगुनान लग।

मुझ साहस हुआ और जस-तस मैंन एक गात सुनाना आरम्भ किया।

निराला जी बडा तन्मयता स मरा गात सुनत रह और अन्त म बड दुलार स मरा कधा पकड कर बाल तुम ता बहुत अच्छा लिखत हा—क्या नाम बताया ?

मित्र न उन्ह फिर स मरा नाम बताया मरा साहित्यिक गतिविधिया क बारे म चचा का !

निराला जा थाडा चकित हुय और मुझ अपना रचनाय दिखान क लिय प्रात्साहित किया।

अब मैं उनस सब कहा था अत मन इच्छा प्रगट का कि मैं आपक साथ अपना एक चित्र खिचाना चाहता हू।

व हैरान हा उठ फिर बड साधारण ढग स बाल ठाक है खिचा ल मगर फाटा ग्राफर कहा है।

आपन स्वाकृति द दी है ता किसी दिन उस साथ लकर आऊगा। मैं बाला !

'तुम चाय कुछ साआग ? व बड अपनत्व स बाल चाय ता मिल सकता है।

नहीं पंडित जी हम नादता करके चले हैं। गौड़ जी ने श्रद्धा से सिर झुकाकर कहा, आप परेशान न हों दर्शन करने चला आया था।

निराला जी अपने आप में मुस्कराकर रह गये। कुछ देर तक साहित्यिक चर्चायें चलती रहीं फिर हम उनका आशीर्वाद लेकर विदा हुये।

हिन्दी के वे पहले महान साहित्यकार थे जिनमें मैंने सहृदयता स्नेह और महानता की यह अविस्मरणीय झलक देखी।

महाकवि निराला और इतना साधारण-स्तर जीवन ? मैं रास्ते भर सोचता रहा।

अगली बार फोटोग्राफर साथ लेकर उनके साथ तस्वीर खिंचाने का प्रोग्राम बनाते-बनाते वर्षों बीत गये और ?

सोवियत संघ में निराला

निराला जी की कई रचनाओं का अनुवाद रूसी भाषा में हुआ है और उन्हें रूसी जनता ने मुक्त कण्ठ से सराहा है।

सोवियत निवासी उनकी रचनाओं से पहले से ही परिचित रहे हैं। उनकी अनूदित कृति में परिमल जिसमें जूही की कली और शिवाजी का पत्र आदि रचनायें संग्रहित हैं। मास्को लेनिनग्राद और ताशकन्द तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी निराला साहित्य के अनेक अनुरागी पाठक हैं।

निराला जी की मृत्यु पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये भारत स्थित सोवियत के सांस्कृतिक विभाग द्वारा सभा आयोजित हुई थी जिसमें प्रसिद्ध सोवियत भारत विद्याविद डॉ० चेलीशेव ने शुद्ध हिन्दी में भाषण देते हुये निराला साहित्य के रूसी अनुवाद पर प्रकाश डाला था और उनके एक गीत का पाठ भी किया था।

सभा में उन्होंने निराला के साक्षात्कार के संस्मरण भी सुनाये।

रामचरित मानस के रूसी अनुवादक स्वर्गीय अवान्निकोव के हिन्दी प्रेमीपुत्र प्यात्र वारान्निकोव अपने भारत प्रवास काल में कई बार निराला से मिले थे। उन्होंने निराला की कृतियों का गंभीर अध्ययन किया था।

निराला : दूसरों की दृष्टि में

निराला अपनी दृष्टि में इतने महान थे कि उस महत्ता की जांच-पड़ताल को अपना अपमान समझते थे। समाज में यह अपमान उन्हें कदम कदम पर मिलता था। वे इस अपमान को महसूस करते थे, यही उनकी असफलता थी। इस अपमान को मान में बदलने का वह कोई प्रयत्न न करते थे, इसके लिये न मुड़ते थे न झुकते थे, यही उनकी सफलता थी।

—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

निराला अपराजेय थे। जीवन भर तरह-तरह की भीतरी बाहरी आपदाओं ने घेर घेर कर उनका सिर झुकाना चाहा, पर निराला अन्तिम क्षण तक अपनी आन पर अड़े रहे। ऐसे ही नरसिंहों की मौत पर स्वयं मृत्यु का माथा भी आदर से झुक जाता है।

—अमृतलाल नागर

पिछले बीस वर्षों में पूरे नये साहित्य का निर्माण जिस एक धुरी पर हुआ है वह निराला जी का समर्थ व्यक्तित्व था। उन्होंने अजाने ही मानो अपने ऊपर सारा युग ओढ़ लिया था।

—ठाकुरप्रसाद सिंह

पहलवानी, पाकशास्त्र और शास्त्रीय संगीत इनके चिर रचनाशील व्यक्तित्व के कौतुक मात्र थे, वस्तुतः वे सबसे पहले कवि थे।

मूड था, जब न लिखते तो महीनों न लिखते और जब लिखने बैठते तो एक दिन में ही दस-दस गीत लिख डालते।

—अजितकुमार

निराला तो अपने जान जो ठाट-बाट पसन्द लगे गये। उनकी दानशीलता [illegible] निराली दुनिया ने दिग्दर्शना का मजा ले लेकर [illegible] पर कठोर सत्य तो यह है कि निराला स्वयं उदारता के घर पाकर दूसरों को अमन चैन [illegible] गये।

—आचार्य शिवपूजन सहाय

निराला ने अपने जीवन का अमृत अंश बहुत पहले ही निचोड़ दिया था शायद आखिरी बूंद तक काव्य के लिए समाज के लिए। जो शेष रह गया था वह विष था जो उन्होंने अपने लिए रख छोड़ा था और जो अनेक विकृतियों के रूप में समाज के सामने आता रहा।

—डा हरिवंश राय बच्चन

उनकी रचनाओं में माहकता के साथ प्रौढ़ता गंभीरता के साथ सरसता भी है।

—कांति वर्मा

जीवन की समष्टि में निराला जी किसी दुर्लभ सीप में ढले मोती नहीं है जिसे अपनी महार्घता का साथ देने के लिए स्वर्ण और सौन्दर्य प्रतिष्ठा के लिए अलंकार का रूप चाहिए। वे तो अनगढ़ पारस के भारी शिलाखण्ड हैं न मुकुट में जड़कर कोई उसकी गुरुता सम्भाल सकता है और न पदत्राण बनाकर कोई उसका भार उठा सकता है वह जहां है वहां उसका स्पर्श सुलभ है।

—महादेवी वर्मा

सामाजिक जीवन की रूढ़ियां साहित्यिक क्षेत्र के बंधन वैयक्तिक जीवन की कुठाएं इन सबका भंजन करने के लिए निराला धर्म योद्धा की निष्ठा के साथ जुड़ पड़े। घोर वर्जनाओं वाले समाज में उन्होंने नाना समझी जाने वाली जातियों से बराबरी का बर्ताव किया नहीं बने। गांव की साप्ताहिक हाटों में वे गांव की दुकानों पर मोल-ताल करते हुए नजर आये।

पुत्री के विवाह में स्वयं पुरोहित बने। साहित्यिक क्षेत्र में सबसे पहला प्रहार बंधनमय छन्दों पर ही हुआ। समय से नारी की वेदना के लिए कमरकस की हद कर दी। उन्होंने शक्ति की साधना में ही अपना सर्वस्व लगा दिया।

महाप्राण की जन-अनुमोदित उपाधि उनके लिए सर्वथा उपयुक्त है।

—ओंकारनाथ श्रीवास्तव

मैं राष्ट्र होता तो निराला के बाद कोई और मस्तक न टूटता रारिक होता तो हिमालय का सबसे ऊंचा शिखर लेकर लिखता तक विश्व की आँखों में आज न रहता।

—जानकी वल्लभ शास्त्री

जब तक हम साहित्यकार को न समझें उसका साहित्य नहीं समझ सकते। निराला और संघर्ष का चोली-दामन का साथ था और संघर्ष में जीवन ही काव्य हो जाता है।

—बेढब बनारसी

उन्मत्त परिकल्पनाएँ में मस्त वाला रवि अपने में पूर्व के समग्र सांस्कृतिक इतिहास का पुंज लाता है। निराला की पृष्ठभूमि में भारतीय-दर्शन ऐतिहासिक मीमांसा सांस्कृतिक जीवन और सांस्कृतिक चेतना सभी वर्तमान है।

—मुद्राराक्षस

पाउण्ड की भांति ही निराला के प्रादुर्भाव से भी हिन्दी काव्य के क्षेत्र में एक तूफान आ गया।

—भगवतशरण उपाध्याय

करता शृंगार कविता का बिना
भूषणों के सुकवि निराला
का तो रंग ही निराला है।

—गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही

आज कहाँ नरसिंह निराला शीश झुकाता मन चंचल हाय ?
भी कहाँ स्वर्ण साथ पाने तुम उस बनारस कूच गाय ?

—मैथिली शरण गुप्त

अमर पुत्र कवि यश काय नव जगमग जिन
स्वयं भारती नत्रा में नग नवता अकेन।

सुमित्रानन्दन पन्त

मस्मरणा के बीच निराला]

वह है कारे कजरारे मेघा का स्वामी।
—डा० धर्मवीर भारती

तुम धरती पर चलते फिरते आसमान हो।
—रमानाथ अवस्थी

आ तेरी जावित मौतो का जीने का त्योहार बना दू।
—माखनलाल चतुर्वेदी

ताण्डव और लास्य की ध्वनि म
मुक्त गीत तुमने गाये हैं।
—डा० रामकुमार वर्मा

हे कवि कुल गुरु हे महिमामय हे सन्यासी
तुम्हे समझता है साधारण भारतवासी।
—नागार्जुन

निराला!
जो पसीने अन्धडो और तूफानो से बना था
जो हर तूफान के ऊपर उन्नती ध्वजा सा तना था
जो हर तूफान के बाद इस ध्वजा से
झरते थे फूल जुगनू भर फूल तितलियां
बच्चो की मुस्कानें किताबो के पन्ने
मानो म और अनायास रचनायें
तुम्हारे आस पास बिखरी हुई अमृत गाथायें।
सुरेन्द्र तिवारी

काव्य साहित्य

१—अधिवास
२—जूही की कली
३—अनामिका
४—परिमल
५—गीतिका
६—तुलसीदास
—कुकुरमुत्ता
८—अणिमा
९—अपरा
१ —नये पत्ते
११—बेला
१२—अर्चना
१३—आराधना
१४—गीत गुंज
१५—कवि श्री

कथा साहित्य

१—अप्सरा (उपन्यास)
२—अलका
—निरुपमा (कहानी संग्रह)
४—निरुपमा (उपन्यास)
५—प्रभावती (ऐतिहासिक उपन्यास)
—कुल्ली भाट (रेखाचित्र)
७—चमेली (अपूर्ण रचना)
८—बिल्लेसुर बकरिहा (रेखा चित्र)
—सुकुल की बीबी (कहानी संग्रह)

मस्मरणा व वाच निराना]

१ –चतुरा चमार (कहानी सग्रह)
११–चोटा की पकड़ (अचरा रचना)
१२–लेना (कहानी सग्रह)
१३–चार वारनाम (उपयाम)

जीवनिया

१—भक्त ध्रुव
२—महाराणा
३—भक्त प्रह्लाद
४—भीष्म

अनूदित रचनायें

१—महाभारत
२—श्री राम कृष्ण वचनामृत
३—रामायण
४—भारत मे विवेकानन्द
५—बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
६—गीत गुंज

नाटक

१—समाज
२—शकुन्तला
३—ऊषा
४—अनिरुद्ध
५—राजयोग

विविध

१—हिन्दी बगला शिक्षा

काव्य साहित्य

१—अधिवास
२—जूहा की कली
३—अनामिका
४—परिमल
५—गानिका
६—तुलसीदास
—कुकुरमुत्ता
८—अणिमा
९—अपरा
१ —नय पत्त
११—बेला
१२—अर्चना
१३—आराधना
१४—गान गज
१५—कवि ना

कथा साहित्य

१—अप्सरा (उपन्यास)
२—अलका
—लिली (कहानी संग्रह)
४—निरुपमा (उपन्यास)
५—प्रभावती (ऐतिहासिक उपन्यास)
—कुल्ली भाट (रेखाचित्र)
७—चमेली (अपूर्ण रचना)
८—बिल्लेसुर बकरिहा (रेखा चित्र)
—सुकुल की बीवी (कहानी संग्रह)

सम्मरणों के बाद लि[illegible]]

१०—चतुरा चमार ([illegible])
११—चाँगा का [illegible] ([illegible])
१२—[illegible]वा ([illegible])
१[illegible]—[illegible]ार का[illegible] ([illegible])

जीवनियाँ

१—भक्त ध्रुव
२—म[illegible]
३—भक्त प्र[illegible]
४—मा[illegible]

अनूदित रचनायें

१—महाभारत
२—श्री राम[illegible]
३—रामायण
४—भारत में विवेकानन्द
५—बंकिमच[illegible]
६—गान गज

नाटक

१—समाज
२—शकुन्तला
३—ऊषा
४—अनिरुद्ध
५—राजयोग

विविध

१—[illegible] वगना [illegible]